साज़ ए दिल

काव्य संग्रह

नवीना सोनी "साज़"

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Navina Soni "Saaz" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69906-29-6

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: August 2026

मेरी प्रेरणा, मेरी माँ

श्रीमती सुंदर देवी टुटेजा

को सप्रेम समर्पित...

आपकी ममता ही मेरी
हर कविता की रूह है।

मेरी प्रेरणा

— नवीना सोनी

कविता मेरे लिए केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि मेरे मन की अनुभूतियों का सजीव रूप है। जीवन की हर छोटी-बड़ी घटना, हर सुख-दुःख, हर संघर्ष और हर मुस्कान ने मेरे भीतर भावनाओं का एक ऐसा संसार रचा, जिसे शब्दों में पिरोने की प्रेरणा मुझे समय के साथ मिलती गई। बचपन से ही प्रकृति की सुंदरता, रिश्तों की गरमाहट और जीवन के बदलते रंग मुझे गहराई से प्रभावित करते रहे। इन्हीं अनुभवों ने मेरे मन में कविता के बीज बोए।

जीवन की व्यस्तताओं में कई बार स्वयं को पीछे छोड़ दिया, लेकिन जब भी मन को एकांत मिला, शब्द स्वतः कागज़ पर उतरने लगे। मुझे महसूस हुआ कि कविता केवल मेरी अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उन अनगिनत लोगों की भावनाओं की भी आवाज़ है, जो अपने मन की बात कह नहीं पाते। मेरी रचनाओं में प्रकृति का सौंदर्य, माता-पिता का स्नेह, नारी का आत्मसम्मान, रिश्तों की मिठास, समाज की सच्चाइयाँ और जीवन के सकारात्मक संदेश सहज रूप से स्थान पाते हैं।

इस कविता-संग्रह को लिखने की प्रेरणा मुझे अपने अंतर्मन से मिली। मैंने चाहा कि मेरे अनुभव, मेरी भावनाएँ और मेरे विचार शब्दों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचें और उनके जीवन में भी आशा, उत्साह और आत्मविश्वास का संचार करें। यदि मेरी कोई भी कविता किसी एक व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान ला सके, किसी निराश मन को नई उम्मीद दे सके या किसी को अपने भीतर छिपी प्रतिभा पहचानने की प्रेरणा दे सके, तो मैं अपने लेखन को सार्थक मानूँगी।

यह पुस्तक मेरे हृदय की भावनाओं का संग्रह है। मैं ईश्वर, अपने परिवार, गुरुजनों, मित्रों और उन सभी पाठकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे निरंतर लिखने का साहस और प्रेरणा दी। आशा है कि मेरी कविताएँ आपके हृदय को स्पर्श

करेंगी और जीवन को प्रेम, संवेदना तथा सकारात्मकता से भरने का एक छोटा-सा प्रयास सिद्ध होंगी।

— **नवीना सोनी**

अनुक्रमणिका

1. "जय मां शारदे" 1
2. कृष्ण लीला 3
3. बेबस पिता 4
4. दुआएं मां की 5
5. प्रेम ‘परे मैं से’ 6
6. पुस्तकों मैं अरुचि 7
7. नारी तू नारायणी तेरे रूप अनेक 8
8. मात पिता की भावनाएं 9
9. हुनर खुद का 10
10. नमन मातृ दिवस 11
11. भोर सुहानी 13
12. नमन मातृ दिवस 15
13. रोटी दो जून की 17
14. विजय दशमी 18
15. भ्रष्टाचार। "उन्माद" 20
16. बरसात सावन की 21
17. बसंत पंचमी 22
18. समय की कीमत 24
19. खुद को खुद ही आगे बढ़ाओ 25
20. आज के शिक्षित बच्चे 26
21. ज़िन्दगानी का सफर 27
22. जीवन की सत्यता 28

23. टूटते ख्वाब 29
24. बचपन की बरसात 30
25. शरारती बचपन 31
26. मन हरण घनाक्षरी। "राम नवमी" 33
27. देश भक्ति गीत 35
28. स्वतंत्रता दिवस 37
29. जश्न ए आज़ादी 38
30. बंटवारा 1947 40
31. नारी 42
32. मन हरण घनाक्षरी 44
33. संवारें ज़िन्दगी 46
34. होली 47
35. मैं कविता हूँ 49
36. चौपाई छंद। विरह 50
37. सावन का विरह गीत 52
38. सफलता की चाह 54
39. ।।श्री राम जी को नमन।। 56
40. सदा मुस्कुराते रहो 57
41. नवल वर्ष 59
42. दर्पण 61
43. ज़िन्दगी बड़े कमाल की है 62
44. बदकिरदार लोग 64
45. कलाकारी रब की 65
46. निईच्छा 67
47. मुनाफिक लोग 68

48. अपना गांव 69
49. खामोशी 70
50. प्रेम चढ़ा परवान..71
51. मक़सद ज़िन्दगी का 72
52. प्रेम ही दर्द की दवाई हैं 74
53. सुहानी भोर..76
54. अपेक्षा की उपेक्षा..78
55. जीवन का सत्य...80
56. भ्रष्टाचार..82
57. रक्षा बंधन..83
58. बेटियां 85
59. कन्या पूजन।..87
60. आस्तीन के सांप 89
61. हिंदी दिवस...91
62. जीवन का सत्य...93
63. भीतर भरा वैमनस्य 95
64. नमन मात पिता को...96
65. करवा चौथ। घनाक्षरी छंद...98
66. करवा चौथ। गीत 100
67. दो जून की रोटी...101
68. अदाकारी लफ़्ज़ों की...103
69. रोटी दो जून की...104
70. दिलों पर हुक़ूमत 105
71. आज के बच्चे नहीं समझते..107
72. खुद में बदलाव 109

73. प्यारी गुड़िया रानी 110
74. मजदूर दिवस 112
75. हुक़ूमत 114
76. सत्य की राह 116
77. मज़ा ज़िंदगी का 117
78. इक राधा इक मीरा 118
79. शिकवे शिकायत ही अवसाद का कारण है। 119
80. गुरु शिष्य का अद्भुत नाता 121
81. कृष्ण जन्माष्टमी छंद चौपाई "गीतिका" 123
82. सच्चा हृदय सच्ची मुस्कान 125
83. महत्ता ईश्वर की 126
84. श्री राम महिमा 128
85. अर्ज़ किसानों की 130
86. प्रभु कृपा 132
87. आज की पीढ़ी 134
88. मश्विरा 135
89. पहले की और आज की शादियां 136
90. नज़र पारखी रखिये। 138
91. तस्वीर ख़यालों की। 139
92. प्रेमी का प्रेमिका को मनाना 140
93. इश्क पर शोध 142
94. खुद्दारी खुद से 144
95. प्रभु पर अडिग विश्वास 146
96. सावन की पहली फुहार 148
97. खुद के लिए भी जीना सीखो 150

98. फितरत नहीं बदलती 152
99. रवैया बच्चों का 153
100. बांटों ज़िन्दगी के अनुभव 154
101. पुरानी सुनहरी यादें 155
102. ईमान दारी खुद से 156
103. आरोपी खुद को टटोलें 158
104. सच्चा इश्क 159
105. महिला दिवस 160
106. साज़ ए दिल 161
107 कलयुगी सिया 162

1.
"जय मां शारदे"

विद्या की देवी सरस्वती।
शत शत तुमको मैं नमन करूं।
करो तमस का नाश महारानी।
चरणों में सदा तेरे शीश धरूं।।

हे! मात शारदे कृपा करो।
रसना में रस का हो संचार।
वीणा वर दायिनी नमन तुझे।
तू ही तो है जग का आधार।।

बनें दिव्य लेखनी मेरी सदा।
नित नूतन मैं संधान करूं।
रहे अंतर्मन सद उजियारा।
निर्भय हो कर तुझको मैं भजूं।।

हे! हंस वाहिनी मात तुझे।
सम्पूर्ण जगत है पूज रहा।
बक्शो सद्प्रेरणा सर्व को तुम।
भटका मन तुझको ढूंढ रहा।।

होता जब हुक्म तुम्हारा मां।
तब लेखन भी होता आसान।
अशीष तेरा यदि मिलता रहे।
तब मूरख भी होता धीमान।।

रसना में मेरी तुम वास करो।
गायन में मेरे रस भर दो मां।
गुनगान करूं मैं सदा तेरा।
निज कृपा से तुम भर दो मां।।

2.
कृष्ण लीला

कभी बंसी बजाते हो कभी चक्कर उठाते हो।
सभी भटके हुओं को तुम सही मारग दिखाते हो।।

कभी राधा कभी ऊधव कभी रुक्मिणि सत्यभामा।
अहं जिसमें भी आ जाये उसी का सर झुकाते हो।।

अकारण इंद्र को आया अहम् मर्दन किया उसका।
उठा कर भार गोवर्धन वहीं सबको बचाते हो ।।

यशोदा के दुलारे तुम सभी के खूब प्यारे हो।
कभी माखन चुराते हो कभी गौवें चराते हो।।

सभी गोपी सभी ग्वाले तुम्हें सब प्यार करते हैं।
सभी के दिल में रहते हो सभी का दिल चुराते हो।।

बड़ी मीठी सुरीली है तुम्हारी तान बंसी की।
सुना बंसी की धुन ऐसी सभी का दिल लुभाते हो।।

बड़ी लीला करी तुमनें बिरज की कुंज गलियन में।
समय जब कंस का आया चले सब छोड़ जाते हो।।

कलम कितनी लिखे महिमा मगर तू अपरिभाषित है।
तुम्हारा ज़िक्र जो करते फिक्र उनकी मिटाते हो।।

3.
बेबस पिता

वर का पिता वधु के पिता से मांगता खैरात क्यों।
रोते पिता की आंख के दिखते नहीं जज़्बात क्यों।।

बेटी सभी के पास है ख़ौफे खुदा सोचो ज़रा।
दोषी यहां पर सब खड़े पैदा किये हालात क्यों।।

बेटी पराया धन नहीं बेटी खुदा का नूर है।
दोनों घरों की रौशनी है फिर पराई ज़ात क्यों।।

बेटी इबारत है खुदा की तरबियत दो प्यार से।
जब है मुहाफिज़ खुद खुदा फिर सह रहे आघात क्यों।।

बेटी कमाई कर रही है जी रही सम्मान से।
फिर ज़िन्दगी में वो बशर खाये किसी से मात क्यों।।

बेटी पिता का मान है बेटी पिता की है गुमां।
फिर लोभियों के हाथ में फेरे दिलाये सात क्यों।।

ईमान ग़र दोनों तरफ खैरात का फिर काम क्या।
जब मिल गये हैं वर-वधू फिर फालतू बारात क्यों।।

मुहाफिज़ - रक्षक, तरबियत - पालन- पोषण, इबारत-रचना।।

4.
दुआएं मां की

दुआएं हों अगर मां की मुक़द्दर मुस्कुराता है।
बड़ा सुंदर बड़ा मोहक   तराना गुनगुनाता है।।

दिलों में प्यार भर देता जो' सूखे हैं ज़मानों से।
शिखर की ओर जाता वो सभी की प्रीत पाता है।।

दिखाना मत कभी रुतबा उसे तुम कामयाबी का।
जियारत जो कराओगे खुदा ऊंचा उठाता है।।

कभी बरहम जो' हो जाओ दिखाना मत कभी आंखें।
दुखाया दिल जो' मां का तो खुदा भी रूठ जाता है।।

नज़र अंदाज मत करना कभी तुम बेक़सी उसकी।
करोगे मां की ख़िदमत तो खुदा बरक़त दिलाता है।।

सुकूं पाना है' जीवन में तो' मां की गोद में आना।
लगा लेगी गले तुमको उसे अंदाज आता है।।

सदा रखना दुआओं से भरा तुम हाथ सर पर मां।
तुम्हारी याद में हर दम ये' दिल तो डूब जाता है।।

"नवीना" ज़िन्दगी में तुम किसी का दिल दुखाना ना।
खुदा के पास जाना है खुदा सबको बुलाता है।।

बरहम- क्रोधित, ज़ियारत- तीर्थ यात्रा, बेक़सी- मजबूरी
खिदमत – सेवा

5.
प्रेम 'परे मैं से'

परे मैं से जो' होता है वही तो प्रेम होता है।
अगर समझे न मन इसको सभी कुछ अपना खोता है।।

जहां सच्चाई होती है वहीं पर प्रेम है टिकता।
समर्पण हो अगर मन में वहीं पर प्रेम फलता है।।

सभी कुछ पा लिया तो क्या इसे तुम प्रेम मत समझो।
जो' सच्चा प्रेमी होता है वही सर्वस्व लुटाता है।।

खुदा भी तब तुम्हें देता जो' तुम भी आगे देते हो।
सही बरकत तभी होती जो' दसवां हिस्सा देता है।।

अहं को प्रेम जीवन में कभी भी मिल नहीं पाता।
जो' झुकता है वही पाता प्रेम की अपनी भाषा है।।

कृष्ण भी बिक गये थे खुद किया जो अहं सतभामा।
जिताया प्रेम को प्रभु नें अहं को सबक सिखाया है।

सुखी जीवन में रहना है लुटाओ प्रेम तुम सब पर।
प्रेम ही सर्वे सर्वा है "नवीना" ने बताया है।।

6.
पुस्तकों मैं अरुचि

आजकल पुस्तकों का   पढ़ना ही बन्द हुआ।
मोबाइल पे अब सभी   अस्त व्यस्त हो गये ।।

लैपटॉप हाथ में है   आंखें धंसी साथ में हैं।
बैठे- बैठे कुर्सी पर   खुद पस्त हो गये।।

पढ़ना- पढ़ाना सब   नैट पर हो गया है।
रीढ़ वाली हड्डी से भी   पूरे ध्वस्त हो गये।।

शिक्षा ऊंची हो गई है   निम्न हैं संस्कार हुए।
अहम् की बीमारी से   सभी ग्रस्त हो गये।।

आधी- आधी रात देखो   मज़ा करें पार्टियों में।
घर द्वार त्याग बच्चे   कैसे मस्त हो गये।।

छोटी- छोटी उम्र में ही   बातें करें बड़ी-बड़ी।
प्रेम भाव मर्यादा से।   सारे रिक्त हो गये।।

बड़ों को ये समझे हैं   ओल्ड फैशन वाले हैं।
खुद को समझते ये   समझदार हो गये।

7.
नारी तू नारायणी तेरे रूप अनेक

नारी तो नारी है इक दिव्य कहानी है।
आंचल में ममता है नैनों में पानी है।।

देवी का रूप है ये सम्मान करो इसका।
दोहन मत करना तुम तुम्हें लाज बचानी है।।

नारी बिन नर आधा घर रहता है सूना।
रौनक है घर की ये यही घर की निशानी है।।

मीरा जैसी है लगन भाव शबरी जैसा है।
सीता जैसा है त्याग कभी अम्बे रानी है।।

कभी मुश्किल बातों को हंस कर सह जाती है।
कभी नटखट बन कर के करती मनमानी है।।

कोमल कमज़ोर नहीं तू सबला नारी है।
पड़े आन ज़रूरत तो बनती नारायणी है।।

श्रृंगार करें नारी बड़ा अच्छा लगता है।
मर्यादित रह कर करे खुद की निगरानी है।।

खुद टूटती रहती है पर घर को सहेजती है।
तुम क़दर करो उसकी करो मत नादानी है।।

पत्नी बनकर के ये कभी रौब जमाती है।
कभी बन झांसी रानी बनती मर्दानी है।।

8.
मात पिता की भावनाएं

मात पिता बच्चों को पालें, अफसर उन्हें बनाने को।
करें त्याग जीवन का अपने, उनका मान बढ़ाने को।।

अन्त समय फिर ऐसा आता, व्यस्त सभी हो जाते हैं।
मात पिता को वृद्धाश्रम में, रखते वक्त बिताने को।।

कहने को दो-दो बेटे हैं, पर दोनों बाहर रहते।
कभी ज़रूरत आन पड़े तो, आते नहीं ठिकाने को ।।

पढ़ा लिखा कर बड़ा किया था, शायद सर ऊंचा होगा।
पता नहीं था चल देंगे वो, पिंड अपना छुड़वाने को।।

समय मृत्यु का जब आया तो, सोचा अब तो आयेंगे।
फोन किया दोनों नें हमको, समय नहीं है आने को।।

अधिकारों को सब देखें हैं, नज़र नहीं कर्तव्यों पर।
श्राद्ध दान भी करते केवल, लोगों को दिखलाने को।।

मात पिता जीवित हैं "नवीना", पूरे करो अरमान जी।
खामखां बातें मत करना, लोगों को बतलाने को।।

९.
हुनर खुद का

हुनर अपना दिखाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।
सभी का प्यार पाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

ज़माने में अगर तुमको सभी का प्रेम है पाना।
किसी को ना सताने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

खुशी जो मिल रही तुमको ज़रा सा मुस्कुराने से।
ज़रा बस मुस्कुराने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

करो तुम प्रेम उनसे जो' परेशां हैं ज़माने में।
मदद फिर सबकी करने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

किसी की बात दिल पर जो तुम्हारे लग गई हो तो।
वही बातें छिपाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

कभी जो आपसी तकरार हो जाये तुम्हारी तो।
"नवीना" फिर मनाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

कभी पत्नी को खुश करना हो तुमको तो मेरे भाई।
ज़रा भोजन बनाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।।

10.
नमन मातृ दिवस

मां तो आखिर मां होती है
करती खूब दुलार है।
सर पर रखती हाथ वो अपना
गालों पर पुचकार है।।

मिर्ची लेती चार हाथ में
सर पर देती वार है।
नज़र ना लगे हमें किसी की।
मांगे दुआ हज़ार है।।

पढ़ी लिखी वो कतई नहीं है।
पर वेदों का ज्ञान है।
मन की बात तुरत पढ़ लेती।
उसको पूरा भान है।।

हमें याद है आज भी उसकी।
हर छोटी सी बात भी।
रही परीक्षा की घड़ी तब।
जगती सारी रात थी।।

मां। पीपल की घनी छांव है।
शीतल करती पांव है।
आंचल सर पर रख देती वो।
भर देती सब घाव है।।

चलते चलते जब गिर जाते।
दौड़ी दौड़ी आती है।
हंस कर कहती चींटी भर गई।
ताली खूब बजाती है।।

फूंक मारती ज़ख्मों पर मां।
और बंधाती धीर है।
पकड़ के उंगली तेज़ चलाती।
फुर्र हो जाती पीर है।।

मतलब की सब रिश्तेदारी।
मतलब के सब यार हैं।
सच्चा प्यार तो मां का केवल।
तन मन देती वार है।।

शीश झुकायें मां हम तुमको।
तेरे बड़े उपकार हैं।
कहे "नवीना" भरे हैं तुझसे।
खुशियों के भंडार हैं।।

11.
भोर सुहानी

इक भोर सुहानी आई है।
नभ पर लालिमा छाई है।
करवट लेकर के मौसम ने।
ये कैसी ली अंगड़ाई है।।
इक भोर सुहानी आई है।।

शीतल मन्द पवन की लहरें।
पुष्पों पर डोले हैं भंवरें।
सनन सनन पवन भी कैसे।
मंद-मंद मुस्काई है।
इक भोर सुहानी आई है।।

बदला मौसम बदली काया।
नीलमणि सा रंग है छाया।
हर्षित हो कर खग मृग देखो।
चिड़िया भी चहचहाई है।।
इक भोर सुहानी आई है।।

कल-कल बहता नदियों का जल।
लहरें उसमें उठतीं चंचल।
सुन-सुन कर लहरों की हलचल।
चंचलता मन में आई है।
इक भोर सुहानी आई है।

झम झमाझम वर्षा होती।
आसमान से बरसे मोती।
प्रभु ने भी देखो ये कैसी।
रहमत फिर बरसाई है।
इक भोर सुहानी आई है।
फिर   नई जाग्रति लाई है।

12.
नमन मातृ दिवस

मां तो आखिर मां होती है
करती खूब दुलार है।
सर पर रखती हाथ वो अपना
गालों पर पुचकार है।।

मिर्ची लेती चार हाथ में
सर पर देती वार है।
नज़र ना लगे हमें किसी की।
मांगे दुआ हज़ार है।।

पढ़ी लिखी वो कतई नहीं है।
पर वेदों का ज्ञान है।
मन की बात तुरत पढ़ लेती।
उसको पूरा भान है।।

हमें याद है आज भी उसकी।
हर छोटी सी बात भी।
रही परीक्षा की घड़ी तब।
जगती सारी रात थी।।

मां। पीपल की घनी छांव है।
शीतल करती पांव है।
आंचल सर पर रख देती वो।
भर देती सब घाव है।।

चलते चलते जब गिर जाते।
दौड़ी दौड़ी आती है।
हंस कर कहती चींटी भर गई।
ताली खूब बजाती है।।

फूंक मारती ज़ख्मों पर मां।
और बंधाती धीर है।
पकड़ के उंगली तेज़ चलाती।
फुर्र हो जाती पीर है।।

मतलब की सब रिश्तेदारी।
मतलब के सब यार हैं।
सच्चा प्यार तो मां का केवल।
तन मन देती वार है।।

शीश झुकायें मां हम तुमको।
तेरे बड़े उपकार हैं।
कहे "नवीना" भरे हैं तुझसे।
खुशियों के भंडार हैं।।

13.
रोटी दो जून की

रोटी अब दो जून की
मिले नहीं आराम से
खाने की फुर्सत कहाँ
नाता है बस काम से॥

सुख नसीब में है नहीं
मेहनत कश इंसान के
मज़दूरी दिन भर करे
डिगे नहीं ईमान से॥

वैसे तो प्रभु नें हमें
दिये बहुत सामान
रोटी पर दो जून की
स्वयं   कमा इंसान॥

मज़दूरी हलधर करे
खेतों पर   निशि प्रात
स्वयं तड़पता भूख से
है   अचरज की बात॥

कमा रहा हर आदमी
निज मेहनत के साथ
रिजक नहीं दो जून का
फिर   भी   उसके हाथ॥

14.
विजय दशमी

मन में दूषित विकृतियां।
बसी सभी में तात हैं।।
जला रहे रावण का पुतला।
वाह! मज़े की बात है।।

रावण का पुतला तो मानव।
अग्नि। से। जल जायेगा।।
निज भीतर बैठा जो रावण।
दावानल फैलायेगा।।

रावण तो ज्ञानी पंडित था।
तेरी क्या औकात है।।
राम सा आचरण रखने वाला।
मारे तो फिर बात है।।

मात कौशल्या नें जब पूछा।
राम! क्या रावण तूने मार दिया।।
रावण को मैंने नहीं मारा।
"मैं" नें उसको ही मार दिया।।

अन्त समय लक्ष्मण को भेजा।
भ्रात जाओ रावण के पास।
ले लो ज्ञान छिपा रावण के।
भीतर भरा बहुत कुछ खास।।

बाहर का पुतला सब फूंके।
अपने भीतर झांके कौन।।
बुरा सभी को कहते हैं जो।
अपनी बारी रहते मौन।।

अब दशहरा तभी मनेगा।
मन का रावण अगर मरे।।
सतयुग का हो पुनः आगमन।
प्रभु को शत् शत् नमन करें।।

15.
भ्रष्टाचार। "उन्माद"

फैल रहा उन्माद जहां में जहां तहां है।
गड़बड़ सा व्यवहार जहां में जहां तहां हैं।।

थर थर कांपे है जनमानस देखो कितना।
जीना अब दुश्वार जहां में जहां तहां हैं।।

कार्यालयों में लिखा हुआ है सत्यमेव जयते।
झूठों के सरदार जहां में जहां तहां हैं ।।

जिसमें है ईमान वही तो दर दर भटके।
बेईमानी भरमार जहां में जहां तहां हैं।।

चोरी मर्डर रेप कहीं भी हो जाते हैं।
प्रसाशन बीमार जहां में जहां तहां है।।

दो अंडर द टेबल काम तभी बनते हैं।
रिश्वत का बाज़ार जहां में जहां तहां है।।

निर्धन को ना रोटी मिलती दो जून की।
महंगाई। की मार जहां में जहां तहां है।।

रक्तबीज से बढ़ते हैं अपराधी कितने।
सब नेता के यार जहां में जहां तहां हैं।।

सच को ग़र ईमान बना ले ऐ तू बन्दे।
सच का भी विस्तार जहां में जहां तहां है।।

16.
बरसात सावन की

हुई बरसात सावन की सभी का मन लुभाती है |
तपी थी धूप से धरती   ज़रा अब मुस्कुराती है।।

पड़े झूले हैं' पेड़ों पर   बहारें झूम कर गायें
हवायें झूमती हैं खूब बगिया खिलखिलाती है।।

मनायें तीज का त्यौहार   कजरी गीत सब गायें |
बजे पायल की' छम- छम और चूड़ा खनखनातीं हैं।।

बना मिष्ठान घेवर खूब मंदिर पूजनें जायें |
करें उपवास खुश हो कर सजन का प्यार पातीं हैं।।

हवायें चल रहीं पुरवा घटा बरसात की छायी |
धरा पर पड़ रहीं बूंदें महक सोंधी सी आती है।।

बने बरसात का मौसम कढ़ाई खूब चढ़ती है |
पकोड़े संग घरवाली   गरम चाये बनाती है।।

17.
बसंत पंचमी

ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।
मां हंस पर विराजती।
वीणा मधुर बजाई।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

कोयल भी कूकती है।
हिय सबका हूकती है।
अंबुआ पे बौर आ गई।
उड़ उड़ के रीझती है।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

मधुकर भी गुनगुना रहे।
फूलों को भी रिझा रहे।
भर कर पराग निज भीतर।
मकरंद। हैं लुटा रहे।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

नव कोंपलें भी खिल रहीं।
हर सू सुवास मिल रही।
पतझड़ भी कैसा जी उठा।

शाखाएं भी तो हिल रहीं।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

शीतल मधुर बयार है।
लगे मस्त भी बहार है।
खिल कर सुनहरी धूप भी।
तन पर करे निखार है।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

महुआ भी फूलती है।
डाली भी झूलती है।
ऋतु भी नशीली हो गई।
पुरवईया झूमती है।।
ऋतु फिर बसंत आई।
मां शारदे को लाई।।

18.
समय की कीमत

नश्वर तेरी काया है ये नश्वर ही है माया।
प्रभु का भजन किया नहीं यूं ही जन्म गंवाया।।

घूमा घामी करते हरदम विषय वासनाओं में पड़ कर।
मोह माया नें ऐसा घेरा चित् ना प्रभु में लगाया।।

लोभ मोह में पड़कर तूने करें अराजक धंधे।
हानि लाभ होता है क्या ये कुछ भी समझ ना पाया।।

बुरे कर्म का बुरा नतीजा तुझको तो मिलना ही था।
कुदरत का दस्तूर अटल है जो बोया हो पाया।।

मन की गुलामी से तू करता उल्टे पुल्टे काम।
खौफ ना आया तुझको खुदा का जिसने तुझे बनाया।।

है अफ़सोस दशा पे तेरी कर दी तूने इतनी देरी।
गुज़रा वक्त हाथ नहीं आता तो रो रो अब पछताया।।

कुछ ना होगा हासिल तुझको रहेगा हाथ तू मलता।
पारस जन्म मिला था तुझको कंचन नहीं बनाया।।

19.
खुद को खुद ही आगे बढ़ाओ

अनमोल ये जीवन है ईश्वर में लगाना है।
हो के निर्भय मन तुझे मंज़िल को पाना है।।

राहें मजबूर सही मंज़िल तो आयेगी।
ईश्वर की कृपा होगी तेरा साथ निभायेंगी।।
तुम रुक कहीं मत जाना खुद को आगे बढ़ाना है।
हो के निर्भय मन तुझे   मंज़िल को पाना है।।
अनमोल****

दुनिया तुझे रोकेगी आवाज नहीं सुनना।
अपनी धुन में चलकर अपनी राहें चुनना।
इक दिन तो सफलता को तेरे सामने आना है।
हो के निर्भय मन तुझे   मंज़िल को पाना है।।
अनमोल****

दिलकश ये नज़ारे हैं   तुम नज़र नहीं धरना।
तोड़ेंगे सब तुमको   इनसे तुम मत डरना।।
दस्तूर खुदा को भी   अब खुद का निभाना है।
हो के निर्भय मन तुझे   मंज़िल को पाना है।।
अनमोल*****

अगर कुछ लक्ष्य पाना है लगन दिल में ज़रूरी है।
मिलेगी जीत फिर तुमको अगन दिल में ज़रूरी है।
करो संघर्ष जमकर तुम   खुदा भी साथ देता है
रहो फिर लक्ष्य की खातिर मगन दिल में ज़रूरी है।।

20.
आज के शिक्षित बच्चे

सिखाया बोलना जिनको वो' चुप रहना सिखाते हैं।
पढ़ायी थी जिन्हें गिनती पहाड़े हमें पढ़ाते हैं।।

अजब इंसाफ है लोगों ज़माने का यहां देखो।
जिन्हें चलना सिखाया था वही हमको गिराते हैं।।

बड़े क्या हो गये बच्चे कि उनके पर निकल आये।
जिन्हें उड़ना सिखाया था वही अब हमें रुलाते हैं।।

नशा दौलत का' छाया है ज़हन में आज उनके तो।
किनारा कर के फिर हमसे हमीं को आज़माते हैं।।

खुदा बक्शे ज़हन उनको खुदा से हम मनाते हैं।
ज़माने भर की हर खुशियां उन्हीं पर हम लुटाते हैं।।

शज़र बूढ़ा हुआ तो क्या इसे तुम काट मत देना।
लगा रहने दो आंगन में इसे तुम छांट मत देना।
नहीं ये आज फल देता हवा तो इनकी शीतल है।
करो सेवा सभी मिलकर इसे तुम बांट मत देना।।

21.
ज़िन्दगानी का सफर

आपका मिलना बशर अच्छा लगा।
ज़िन्दगानी का सफर अच्छा लगा।।

ज़िन्दगी में साथ देंगे हम सदा।
आपका दिल इस क़दर अच्छा लगा।।

मिल के सपनें जो सॅजोये थे कभी।
देखने का वो जिगर अच्छा लगा।।

इश्क हमनें तो किया था शान से।
हो गया तुम पर असर अच्छा लगा।।

याद में दिल गुनगुनाता फिर रहा।
खिल गये देखो शजर अच्छा लगा।।

जो शहर हमको न भाता था कभी।
अब "नवीना" वो शहर अच्छा लगा।।

मिले सम्बल तुम्हारा तो जहां को जीत लेंगे हम।
जलायेंगे दिये मिलकर हवा को जीत लेंगे हम।
नियत अवदात ग़र अपनी खुदा भी साथ देता है।
मिलेगा प्रेम फिर सबका दुआ भी जीत लेंगे हम।।

22.
जीवन की सत्यता

जीवन में हर सुख दुख को अपनाना पड़ता है।
सब के आगे ग़म में भी मुस्काना पड़ता है।।

लोग नमक लेकर फिरते दिल खोल नहीं सकते।
दिल के ज़ख्मों को दिल में दफ़नाना पड़ता है।।

रखते हैं ईमान सदा हम अपने कर्मों में।
फिर भी लोगों से क्यों धोखा खाना पड़ता है।।

मेरे दिल में हे ईश्वर विश्वास भरा पूरा है।
आ जाये ग़र खोट ज़रा निपटाना पड़ता है।।

कर्मों का सब लेखा जोखा बोयेगा सो पायेगा।
फिर फिर इस दुनिया में आना जाना पड़ता है।।

खूब करो शुक्राने प्रभु के हरदम जीवन में।
अन्त समय प्रभु को आवाज़ लगाना पड़ता है।।

मतलबी लोगों से रिश्ता तोड़ देना चाहिए।
दिल मिले ना ग़र किसी से छोड़ देना चाहिए।
झूठ का ओढ़े मुलम्मा सब यहां भरमा रहे।
उस खुदा की ज़ात से दिल जोड़ देना चाहिए।।

23.
टूटते ख्वाब

ख्वाब कितने टूटते इक ग़म भुलाने के लिए।
मुस्कुराता खूब मैं खुशियां जताने के लिए।।

जान भी दे दूं अगर मैं इस ज़माने को बशर।
सर क़लम कर दे जहां मुझको मिटाने के लिए।।

मतलबी दुनिया का' लोगों मत यकीं करना कभी।
लूट लेते हैं अना ये धन कमाने के लिए।।

अब "नवीना" है नहीं ख़ौफे खुदा लोगों मे' भी।
बेच देते हैं खुदा भी लाभ पाने के लिए।।

उस खुदा का इस जहां में ग़र कहर बरपा कभी।
भेज देगा वो बवा दुनिया मिटाने के लिए।।

तुम्हें जो भा रहा है बस उसी से प्यार मत करना।
मिलेगा कुछ नहीं तुमको कहीं इज़हार मत करना।
तजुर्बा तल्ख है अपना मुनाफिक हैं यहां सारे।
बिना सोचे बिना समझे इकरार मत करना।।

24.
बचपन की बरसात

बचपने में लौट जाना चाहती हूं।
फिर वही मिट्टी उड़ाना चाहती हूं।।

बारिशों में भाग कर जाना सड़क पर।
नाव पानी में चलाना चाहती हूं।।

डर नहीं था तब हमें कुछ बात का भी।
मौज मस्ती फिर मनाना चाहती हूं।।

शक्ल थी मासूम अपनी उन दिनों में।
आज वैसे मुस्कुराना चाहती हूं।।

रूठ जाते थे ज़रा सी बात पर हम।
आज मैं सबको रुठाना चाहती हूं।।

बड़ा मासूम था बचपन सुहाना।
छीना झपटी और झगड़ना चाहती हूं।।

जानती हूं है नहीं मुमकिन "नवीना" ।
ख्वाब बस मन को दिखाना चाहती हूं।।

बड़ा प्यारा बड़ा सुंदर हमारा बचपना था वो।
कहीं खेला कहीं घूमा बड़ा ही मनमना था वो।
दुलारे खूब थे सबके बड़े ही उन दिनों हम भी।
सभी का प्यार पाते थे बड़ा दिल खुशनुमा था वो।।

25.
शरारती बचपन

भोला भाला वो बचपन था।
प्यार भरा सुंदर सा मन था।
जहां तहां हम खेला करते।
तन मन हम सबका मगन था।।

घर से पढ़ने जाते मिल कर।
करें शरारत आगे चलकर।
जैसे ही विद्यालय आता।
भोले बन जाते सब मिलकर।।

कक्षा में सब शोर मचाते।
काग़ज़ के फिर जहाज़ उड़ाते।
जैसे ही मैडम आ जातीं।
मुख उंगली रख चुप हो जाते।।

साईकिल कैंची हम चलाते।
कभी कभी राजा बन जाते।
हाथ दोनों ऊपर जब करते।
गिर कर कितनी चोटें खाते।।

रोते रोते घर जब आते।
मम्मी से चप्पल भी खाते।
हाल बुरा होता रो-रो कर।
तब कहीं जाकर खाना खाते।।

घर से बाहर खेला करते।
मम्मी पापा से भी डरते।
मम्मी इक आवाज़ लगाती।
देख उन्हें झाड़ी में छिपते।।

आज के बच्चे क्या खेलेंगे।
बस आगे मोबाइल रखते।
आंखें दिन भर फोड़ा करते।
दिन भर कमरे में बन्द रहते।।

26.
मन हरण घनाक्षरी। " राम नवमी "

राम का प्राकट्य हुआ वचन भी सत्य हुआ।
झूम- झूम नर नारी   मंगल मनाते हैं।।

अवध किशोर आयें   झूमें नाचे सब गायें।
जन - जन अवध में   बधाई   बजाते हैं।।

दशरथ घर आये   कौशल्या के सुत जाये।
निरखि- निरखि मन   नयन सुहाते हैं।।

टुक - टुक देखते हैं   सब को निहारते हैं।
देख- देख मात पिता   खुद को सराते हैं।।

जन्में हैं चारों भैया   रीझतीं हैं तीनों मैया।
गद - गद हो रहीं हैं   प्रेम बरसाते हैं।।

पलना में झूलते हैं   घूम - घूम देखते हैं।
देख-देख माताओं को थोड़ा मुस्काते हैं।।

कट जाते अभिशाप   धुल जाते सभी पाप।
दर्शन राम जी का।   खुशी - खुशी पाते हैं।।

बाधा सारी हरते हैं   शुभ - शुभ करते हैं।
राम नाम जपते ही।   कर्म कट जाते हैं।।

राम नाम बड़ा प्यारा   लगे सबको है न्यारा।
कण - कण में प्रभु हैं   सबको बताते हैं।।

हुआ है जन्म रघुवर का नमन हम सब हि करते हैं।
झुकाते शीश हैं उनको पुष्प चरणों में' रखते हैं।।
जलाये दीप हैं सबनें बधाई दे रहे सबको।
कि मंगल गीत गाते हैं ढोल ताशे भी बजते हैं।।

27.
देश भक्ति गीत

भारत मां के वीर बांकुरे जब शहीद हो जाते हैं।
आज़ादी का तब कहीं जाकर हम भी जश्न मनाते हैं।।
वीरों में है दम लहराते परचम।

मातृभूमि पर तन मन वारे रक्षा हर दम करते हैं।
आज़ादी के दीवानों का सब गुनगान गाते हैं।
जोश भरा वीरों में इतना दुश्मन थर-थर कांप रहे।
चढ़े हिमालय की चोटी पर परचम ये लहराते हैं।।
वीरों में है दम लहराते परचम।।

विश्व विजयी होकर दिखलाया सिंह समान ये गरजे हैं।
नमन तिरंगे को कर के फिर देश का मान बढ़ाते हैं।
शक्ति शौर्य का है प्रतीक ये भारत का अनुपम गौरव।
भर हुंकार युद्ध भूमि में छक्के खूब छुड़ाते हैं।।
वीरों में है दम लहराते परचम।।

प्राणों की परवाह ना करते लिपट तिरंगे में आते।
जन-जन के भीतर भी जज्बा देश प्रेम भरवाते हैं।
पूर्ण विश्व में पल-पल अपनी आन सुरक्षित रखते हैं।
अमन और शांति की खुशबू ये सर्वत्र लुटाते हैं।।
वीरों में है दम लहराते परचम।।

वीरों के संघर्ष को मत तुम जाना भूल।
मना रहे गणतंत्र हम वीरों के पथ शूल।
कर्मठ वीरों नें किया सदा देश का नाम।
वीरों की कुर्बानियां रहीं देश का मूल।।

28.
स्वतंत्रता दिवस

रंग बिरंगे फूलों से है, सजी हुई सुंदर बगिया।
गंगा जमुना सरस्वती सी, बहती हैं कल- कल नदियां।।

भांति भांति की धर्म जातियां, ज्यों फूलों का गुलदस्ता।
प्रेम भाव से मिल कर रहते, है भारत हंसता खिलता।।

सारे जग में जहां भी देखो, है भारत का ही जलवा।
जगह जगह भारत नें खुशियां, धरती पर दी हैं डलवा ।।

खुली वादियां काश्मीर की, हर्षित हैं देखो कितनी।
जब से हटा है तीन सौ सत्तर, बढ़ी है हरियाली उतनी।।

आबरू वतन की हरदम , वीर सुरक्षित हैं रखते।।
अमन और शांति से भोजन, हम सब यहां तभी चखते।।

वीर शहीदों को नतमस्तक, करें सदैव हम आरती।
भारत मां की। गोद में खेले, दुलारती मां भारती।।

नमन है उन शहीदों को वतन पर जो मिटे हरदम।
कफ़न को बांध कर सर पर रहे उन पर डटे हरदम।
किसी कीमत पे दुश्मन को न घुसने दें वतन भीतर।
करें सरहद पे रखवाली क़दम रहते सटे हरदम।।

29.
जश्न ए आज़ादी

गीत   चौपाई छंद

भारत माता के चरणों में शीश सदैव झुकायेंगे।
गीत खुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

भारत की धरती पर जन्में।
शुक्राने करते हैं मन में।
हुए शहीद वीर जो अपने।
करेंगे उनके पूरे सपने।।
याद करेंगे उनको हरदम मेहनत नहीं गंवायेंगे।
गीत खुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

श्रृद्धा के हम सुमन चढ़ायें।
नमन करें और शीश झुकायें।
वीरों की धरती है भारत।
सबनें पायी खूब महारत।
वीरों को सम्मानित कर के जय-जय कार बुलायेंगे।
गीत खुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

हम सब हिन्दुस्तानी भाई।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई।
भारत फूलों का गुलदस्ता।
एक ही गुलदस्ते में सजता।
भड़कावे में ना आ कर के रिपु को दूर भगायेंगे।
गीत खुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

हम सपूत हैं भारत मां के।
रक्षा करते गोली खा के।
अंग्रेजों को मार भगाया।
भारत माता को बचवाया ।।
सच्चे बच्चे बन कर के हम मां को शीश चढ़ायेंगे।
गीत ख़ुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

सैनिक सीमा पर लड़ते हैं।
बाधायें कितनी सहते हैं।
गोली सीने पर खाते हैं।
तब आज़ादी हम पाते हैं।।
आज़ादी पायी मुश्किल से हम तो जश्न मनायेंगे।
गीत ख़ुशी के गायेंगे हम परचम भी लहरायेंगे।।

30.
बंटवारा 1947

आज़ादी तो मिली थी हमको
पर बंटवारा साथ में।
छोड़ सभी कुछ आये थे हम
कुछ भी नहीं था हाथ में।।

रोते बिलखते बच्चों को ले
पांव खिसटते जा रहे।
छाले पड़ गए पांव में थे
किस्मत की चोटें खा रहे।।

रहते थे मिल जुल कर के हम
जाति धर्म का था नहीं भान।
माल अस्बाब था पड़ा छोड़ना
आये बस बचा कर जान।।

आज़ादी का मतलब क्या था
भय दिलों में भरा हुआ था।
राजनीति में पिस गये सारे
कुर्सी का केवल किस्सा था।।

हिन्दू मुस्लिम कुछ भी नहीं था
भाई-भाई थे हम सारे।
होली ईद दिवाली करते
इक दूजे पर जाते वारे।।

दो टुकड़ों में हुआ विभाजित
अपना प्यारा भारत देश।
मुसलमान रह गये उधर सब
आये हिन्दू तज परिवेश॥

किया विभाजन इसीलिए था
भारत होगा हिन्दुस्तान।
मिले जुले सब फिर भी यह गये
क्या हिन्दू क्या पाकिस्तान॥

अपना काम तो बनता भैया
भाड़ में जाए जनता जी।
लोगों को तकलीफें देकर
राजा नेता बनते जी॥

31.
नारी

बृह्मा की रचना है नारी।
धरती की गरिमा है नारी।।
आत्म दृष्टि से देखो यदि तुम।
निश्च्छल और निर्मल है नारी।।

बिखर जाये यदि नर जीवन में।
सही राह पर लाती नारी।।

पड़े मुसीबत नर जीवन पर।
ढांढस उसे बंधाती नारी।।

त्याग दृष्टि से देखो यदि तुम।
है बलिदान की मूरत नारी।।

घर को सदा सम्भाले रहती।
बच्चों का अभिमान है नारी।।

चारों कोने चित् कर देती।
समस्त गुणों की खान है नारी।।

मान दृष्टि से देखो यदि तुम।
देवी का अवतार है नारी।।

नारी बिन घर सूना लगता।
करती सबको प्यार है नारी।

सूरत सीरत दोनो प्यारी।

इज़्ज़त की हकदार हैं नारी।।

उठो नारी चलो नारी नहीं हो तुम कोई अबला।
उठाओ हाथ में खंजर बनाओ खुद को तुम सबला।
उठाये आंख जो तुम पर लगाना खींच के खंजर।
बंधाओ खुद में हिम्मत तुम करो दहाड़ कर हमला।।

32.
मन हरण घनाक्षरी

राधा रानी का श्रृंगार

काले-काले कजरारे   नयन निराले हैं।
करें वो श्रृंगार ऐसा   लगे मतवाले हैं।।

कजरे की धार ऐसी   लगती कटार जैसी।
चाल चले मोरनी सी   रब रखवाले हैं।।

घड़ी-घड़ी देखती है   आईने में शोभती है।
देख ना ले हमें कोई   बैरी जगवाले हैं।।

तन पर गहने हैं   बाजूबंद पहने हैं।
कटि पर करधनी   बिछिया भी आले हैं।।

उड़ती चुनरिया है   हवा में गुजरिया है।
गोरी सकुचाये   देखो खड़े घरवाले हैं।।

सज-धज राधा रानी   श्याम जी की बाट जोहे।
आये जब श्याम प्यारे   खुद को सम्भाले है।।

मुरली बजाई श्याम   राधा आई बृजधाम।
सुध-बुध खोई पग   पड़ गये छाले हैं।।

करें श्रंगार राधा जी रिझातीं श्याम प्यारे को।
चलें फिर चाल हिरनी सी लुभातीं श्याम प्यारे को।
कहें सखियां ओ' राधा सुन बजाते श्याम हैं बंसी।
सुनी बंसी कीं धुन राधा बुलातीं श्याम प्यारे को।।

33.
संवारें ज़िन्दगी

मन हरण घनाक्षरी

ज़िन्दगी तुम्हारी है ये   जान से भी प्यारी है।
दूसरों के पचड़ों में   इसे ना बिगाड़िये।।

करुणा का भाव रखो   नहीं दुर्भाव रखो।
सहज सरलता से   जीवन संवारिये।।

करेंगे विरोधी दंगा   लेना नहीं तुम पंगा।
राम-राम कर आगे   खुद को बढ़ाइये।।

बड़ा कुछ काम करो   देश का भी नाम करो।
कुछ आविष्कार नया   कर के दिखाइये।।

ज़िन्दगी से प्यार करो   जान भी निसार करो।
सब कुछ मिलेगा पर   शीश तो झुकाईये।।

वैलेंटाइन छोड़ो भैया   प्रभु संग जुड़ो भैया।
आने वाली नस्लों को   सबक सिखाईये।।

बढ़ो आगे अगर तुम तो ज़माना खूब जलता है।
समझ लेना तुम्हारी ज़िंदगी की ये सफलता है।
ज़माने को झुकना है तो' रख ईमान कर्मों में।
खुदा जब खुशियां देता है ज़माने को अखरता है।।

34.
होली

मन हरण घनाक्षरी

होली का त्योहार आया खुशियां अपार लाया।
मौसम भी भीना-भीना रंगों का त्योहार है।।

गली-गली घूमते हैं जोगीरा भी गाते हैं।
करते हैं सब पर रंगों की बौछार हैं।।

बाज रहे हैं मृदंग नाचें करें हुड़दंग।
टोलियों में घूम कर खेलें नर नार हैं।।

कान्हा मारे पिचकारी राधा की भिगो दी सारी।
मत करो जोरा जोरी करती गुहार है।।

थक कर राधा प्यारी बोली कान्हा मैं तो हारी।
नहीं माने कान्हा जी मारी रंग धार है।।

गोपियों नें डाला घेरा कान्हा जी को आन घेरा
लाल पीले रंगों वाली मारी पिचकारी है।।

भांग के नशे में चूर गोपियां हैं मजबूर।
कान्हा जी को बांध कर रंग दियो डार है।।

कृष्ण कन्हैया संग खेलें गोपियां हैं रंग।
करती हैं बार बार कान्हा जी से रार हैं।।

समता संदेश देता।   होली का मिला है न्योता।
मिल-जुल प्रेम करो   प्रेम से बहार है।।

मीठी-मीठी गुजिया भी   नमकीन भुजिया भी।
जीमें सभी मिलकर   मस्ती की फुहार है।।

होली खेलो मिल- जुल   जीतो सबका ही दिल।
हाथ जोड़ सभी को   हमारा नमस्कार है।।

35.
मैं कविता हूँ

नदिया सी बहती कविता हूं सुख-दुख को सहती कविता हूं।।
जोड़ -तोड़ कर शब्दों को मैं भावों को कहती कविता हूं।।

खिले हुए फूलों का उपवन कण-कण में महकी कविता हूं।।
पुष्प-पुष्प मधुकर मंडराते भुन-भुन सी करती कविता हूं।।

झरने कल-कल करते बहते इधर- उधर मुड़ती कविता हूं।
पाषाणों पर शोर मचाते हॅस- हॅस कर खिलती कविता हूं।।

शब्द -शब्द में हलचल होती अन्तर्मन हिलती कविता हूं।।
नदियों में लहरें उठती हैं लहरों सी उठती कविता हूं।।

कविता बिन जीवन है सूना तन-मन में खिलती कविता हूं।
जीवन में जब गम बढ़ जाते मन ही मन गढ़ती कविता हूं।।

लिखते ही मन हर्षित होता हर मन को छूती कविता हूं।
नील गगन मैं उड़ना चाहूं आसमान छूती कविता हूं।।

हमारी भावनाओं को सिखाती प्रेम है कविता।
ग़मों को भी बना खुशियां दिखाती प्रेम है कविता।
हृदय में प्रेम भर देती कभी आनन्द छलकाती।
खिले फूलों के उपवन को रिझाती प्रेम है कविता।।

36.
चौपाई छंद।   विरह

चित् चितवन में तुम हो प्यारे ।
निस दिन तुमको नयन निहारें।।

हृदय बसी मम प्रीति तुम्हारी।
कभी तो ले लो खबर हमारी।।

मैं बिरहन यादों में खोई।
भाती नहीं है शय अब कोई।।

मोर पंख की कलम बनाऊं।
पाती तुमको लिखती जाऊं।।

हमनें तो तुमको अपनाया।
दिल से अपना मीत बनाया।।

मन मंदिर में तेरी मूरत।
बीत गये दिन देखे सूरत।।

सावन आया तुम ना आये।
अब तो हमको कुछ ना भाये।।

विरह वेदना किसे सुनाऊं।
भीतर ही भीतर सह जाऊं।।

तुम बिन अब ये दिल ना लगता।
सारा जग मतलब का दिखता।।

चैन न आये हरगिज़ मन को।
आकर अब ले जाओ हमको।।

प्रीतम शीघ्र लौट तुम आओ।
मुझ बिरहन की पीर मिटाओ।।

इश्क किया है हमनें सच्चा साथ जियेंगे साथ मरेंगे।
एक नाव में हम तुम बैठे मिलकर दरिया पार करेंगे।
मिल जायेगा साहिल कोई पकड़ किनारा पार तरेंगे।
घाव दिये हैं लोगों नें जो चलो बैठ कर उन्हें सियेंगे।।

37.
सावन का विरह गीत

आई सावन की है बहार बूंदें बरस रहीं।
सजना नहीं आये द्वार सजनी तरस रही।।

सावन का मौसम बरसाती।
याद पिया की खूब सताती।
नहीं आऊंगा इस सावन में।
लिख कर भेजी मुझको पाती।।
मेरा मन हो गया बेकरार अंखियां बरस रहीं।
सजना नहीं आये द्वार सजनी तरस रही।।

पड़ गये झूले डाली- डाली।
कोयल कूक रही मतवाली।
सखियां झूला झूल रही हैं।
टुक-टुक मुझको घूर रहीं हैं।।
लगते झूले मुझे खार अंखियां बरस रहीं।
सजना नहीं आये द्वार सजनी तरस रही।।

मैं बिरहन यादों में खोई।
खबर तो ले लो मेरी कोई।
चैन न आये हरगिज़ मन को।
आकर के ले जाओ हमको।।
यादों का भरा अम्बार अंखियां बरस रहीं।
सजना नहीं आये द्वार सजनी तरस रही।।

तन्हाई रह-रह के सताये।
विरह वेदना। बढ़ती जाये।
साजन शीघ्र लौट तुम आओ।
मुझ बिरहन की प्यास बुझाओ।।
झूठा ही करो इकरार अंखियां बरस रहीं।
सजना नहीं आये द्वार सजनी तरस रही।।

38.
सफलता की चाह

परिस्थितियों का क्या बदलती रहेंगी।
उलझनों का भी क्या उलझती रहेंगी।।

बना ले खुद को जो मज़बूत इतना।
नज़रों का भी क्या ये फिरती रहेंगी।।

क़दम जो बढ़ाओगे जीवन में अपनें।
ज़माने की नज़रें खटकती रहेंगी।।

करो उनको पूरा जो देखे हैं सपने।
अड़चनें तो हरदम पनपती रहेंगी।।

सफलता की राहों में रोड़े बहुत हैं।
बना लो जो सीढ़ी तो चढ़ती रहेगी।।

करोगे जो विश्वास मेहनत पे अपनी।
फिर रहमत खुदा की बरसती रहेगी।।

ना मायूस होना सदा बढ़ते जाना।
किस्मत तुम्हारी चमकती रहेगी।।

सफलता भी इक दिन क़दम चूमती है।
दुनिया। भी तुमको तरसती रहेगी।।

खुदा नें जो नवाज़ा है क़दर उसकी सदा करना।
नहीं जो पास तेरे है न ग़म उसका बड़ा करना।।
हुनर जो है तिरे भीतर उसे खुलकर दिखाओ तुम।
मिले फिर जो भी तुमको तो शुक्र उसका अदा करना।।

39.
।।श्री राम जी को नमन।।

तुम राम कहो या ना कहो मर्ज़ी तुम्हारी।
इक दिन तो ऐसा आयेगा तुम राम कहोगे।।

बिनु राम की कृपा के कोई काम ना बनता।
समझोगे उनकी माया फिर ही काम करोगे।।

चलने को राह सत्य की प्रभु राम आयें हैं।
चरणों में रख के शीश तुम ही गिड़गिड़ाओगे।।

माना पिता के वचनों को और वन चले गए।
जब त्याग उनका जानोगे तब सर झुकाओगे।।

पावन ये दिन है नवमी का खुशियों भरा हुआ।
आओगे चल के दूर से दर्शन भी पाओगे।।

वो तो सूर्यवंशी राम हैं है भाल दमकता।
उत्साह उनका देखोगे खुद समझ जाओगे।।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को नमन।
विश्वास उन पे होगा शुक्र तब मनाओगे।।

राम का तू नाम ना बदनाम कर।
बस भलाई तू सुबहो शाम कर।
ईष्ट अपने राम हैं उनको नमन।
आ गये हैं राम एहतराम कर।।

40.
सदा मुस्कुराते रहो

ज़िन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो।
गीत खुशियों के भी गुनगुनाते रहो।।
कब कहां कोई दुनिया से होगा विदा।
मिलते-जुलते रहो आते जाते रहो।।
गीत खुशियों के भी गुनगुनाते रहो।।

प्रेम से रीते हैं जो जहां में मनुज।
प्रेम उनके दिलों में जगाते रहो।।
साथ सुख में सभी लोग मिल जाएंगे।
बात तब है जो दुख में निभाते रहो।।
गीत खुशियों के भी गुनगुनाते रहो।।

साथ ग़र दे कोई तो है उनको नमन।
वर्ना खुद से क़दम तुम बढ़ाते रहो।
मिल गये लोग तेरे मुताबिक अगर।
हाथ उनसे "नवीना" मिलाते रहो।।
गीत खुशियों के भी गुनगुनाते रहो।।

छल कपट से हमेशा बनें दूरियां।
सत्य की राह खुद को चलाते रहो।।
खामियों को करो दरगुज़र ऐ बशर।
जोड़ कर सबको महफ़िल सजाते रहो।।
गीत खुशियों के भी गुनगुनाते रहो।।

जीवन में खुश रहना है तो सुख दुख दोनों अपनाओ।
दर्द भरे निज जीवन पर तुम सुख का जामा पहनाओ।
करो भरोसा ईश्वर पर जो हर पल तेरा साथी है।
ईश्वर का दर छोड़ कभी तुम भीख मांगने मत जाओ।।

41.
नवल वर्ष

प्रेम ही प्रेम हो इस नये वर्ष में।
भाव ही भाव हो इस नवल वर्ष में।
कर्म निष्काम हम सब हि करते रहें।
कामना पूर्ति हो सबकी नव वर्ष में।।

हो मधुरता सदा अपने व्यवहार में।
प्रेम से हम सभी से हि मिलते रहें।।
प्रेम ही प्रेम हो।

हो न कटुता ज़रा सी हृदय में कभी।
प्रेम की छांव में सब हि पलते रहें।।
प्रेम ही प्रेम हो।

प्रेम बिकता नहीं है तराजू कभी।
तुलसी दल पर प्रभु खुद ही बिकते रहे।।
प्रेम ही प्रेम हो।

भाव हो जो समर्पित हृदय में मनुज।
मन से चरणों में हरदम हि झुकाते रहें।।
प्रेम ही प्रेम हो।

जैसे मीरा रमी श्याम के रंग में।
रंग ऐसे हम खुद पर हि रंगते रहें ।।
प्रेम ही प्रेम हो।

शुभारंभ नव वर्ष का, सभी मनायें हर्ष।
खुशियों से झोली भरे, मंगलमय हो वर्ष।।
समाचार शुभ हों सभी, कृपा करो जगदीश।
मुक्ति मिले हर कष्ट से, नित नूतन उत्कर्ष।।

42.
दर्पण

दर्पण तो दर्पण है ये सच बतलाता है।
मुखड़ा कैसा भी हो रंगत दिखलाता है।।

क्यों डरते हो लोगों दर्पण तो सच्चा है।
घबराना फिर कैसा खुद से मिलवाता है।।

लट उलझी हो तो फिर उलझन तो होती है।
दर्पण में देखा तो लट को सुलझाता है।।

ये दाग़ दिखाता है सुन्दर से मुखड़े पर।
मायूसी फिर कैसी खुश भी कर जाता है।।

मन क्रोधित जब हो तो दर्पण आगे रखना।
सही रूप दिखा कर के लज्जित करवाता है।।

सच्चाई दर्पण की ये झूठ नहीं कहता।
तुम तोड़ो फिर कितना बहुरूप दिखाता है।।

बाहर का दर्पण तो रंग रूप दिखायेगा।
आतम रूपी दर्पण निज दर्श कराता है।।

आईने पर लगी धूल भी कभी पोछ लिया करें जनाब।
चेहरे पर लगी धूल की सफाई के लिए।
आईना औरों को दिखाने वाले ऐ बरखुरदार सुन ज़रा।
कभी खुद को भी दिखा आईना रुशनाई के लिए।।

43.
ज़िन्दगी बड़े कमाल की है

कभी पहेली बन उलझा देती है।
कभी सहेली बन समझा देती है।।

ये ज़िन्दगी भी बड़े कमाल की है जनाब।
कभी ग़म कभी खुशी बन रिझा देती है।।

मंडराते हैं सर पर जब दुखों के बादल।
बना कर अपना इक सुन्दर सा रूप
रिमझिम बारिश बरसा देती है।।

घेर लेतीं हैं समस्याये जीवन में जब भी।
सहन शक्ति बन कर समस्या सुलझा देती है।।

उकता जाते हैं ऐ ज़िन्दगी जब भी तेरी अदाओं से।
चुपके से भीतर इक नई उम्मीद फिर से जगा देती है।।

हार का भी सामना करना पड़ जाये कभी अगर तो।
बस इक और कोशिश की कशिश जगा देती है।।

अन्त में बड़े प्रेम से कहती है
देख "नवीना" मैं ज़िन्दगी हूं।
बार-बार नहीं मिलती हूं।
पूरे कर तू अरमान अपने
देखें हैं जो तूनें सपनें ।।
ऐसा कह कर कुछ और नया
करने का जज्बा भर देती है।।

सच में ये ज़िन्दगी बड़े कमाल की है।
कभी उलझा देती है कभी समझा देती है।।

****

बहुत उलझी हुई सी है हमारी जिंदगी यारों।
मगर फिर भी मैं करती हूं खुदा की बंदगी यारों।
कभी मत भूलना उसको सदा वो झोलियां भरता।
फ़क़त वो ही तो अपना है नहीं वो मतलबी यारों।।

44.
बदकिरदार लोग

अफवाहें फैलाने वाले भी क्या कमाल करते हैं।
खामखां शरीफों की शराफत नीलाम करते हैं।।

खुद के गिरेबान में झांकते नहीं हैं कभी।
खामियां खुद की दबा कर औरों पर सवाल करते हैं।।

हसद और जलन तो घटिया लोगों की पहचान होती है।
रुसवा हो जाते हैं खुद ही जो बदनाम करते हैं।।

मुतमईन हैं जो औरों को अज़ीयत में डालकर।
ज़हनी मरीज़ होते हैं औरों की खुशियां हलाल करते हैं।।

ख़ौफ ए खुदा भी तो नहीं रहता है इनके भीतर।
उछाल कर औरों की इज़्ज़त नहीं फिर मलाल करते हैं।।

दिल के रईस ही तो खानदानी रईस होते हैं।
बांटते हैं खुशियां सभी को काम बेमिसाल करते हैं।।

जलन इतनी भी मत पालो कि जीवन ही सुलग जाये।
कर्म ऐसे करो मनवा समस्यायें सुलझ जायें।।
करो तुम प्रेम ईश्वर से वही तुमको मति देंगे।
समय रहते सम्भल जाओ तो दुनिया भी समझ जाये।।

मुतमईन - सुकून से, अज़ीयत- परेशानी, ज़हनी – दिमागी

45.
कलाकारी रब की

इस जहां की खूबसूरती उस रब की कलाकारी है।
यहां पर हर इंसान की अपनी- अपनी ज़िम्मेदारी है।।

कब किसको किससे कहां मेल करवा दे वो खुदा।
ये तो बस मेरे उस रब की ही मुख़्तारी है।।

कौन मिलता है मोहब्बत से इस जहां में ऐ बशर।
मिलना-जुलना भी तो बस अब इक बेज़ारी है।।

मसरूफियत इतनी है कि देखना भी मंजूर नही।
शुगल बिना मसरूफियत वाह! क्या खूब अदाकारी है।।

मतलबी दुनिया में लोगों मिलना ज़रा सम्भल कर।
हर सक्षम यहां लिये हाथ में इक कटारी है।।

हंस कर मिलने वाले भी तुम्हें पीठ पीछे बुरा कहेंगे।
शराफत के इन पुतलों में खूब भरी मक्कारी है।।

बच के रहना तुम मनवा इन मिष्ठान भंडारों से।
छलते मीठी बातें कर के पीठ पीछे गद्दारी है ।।

मतलबी लोगों से रिश्ता तोड़ देना चाहिए।
दिल मिले ना ग़र किसी से छोड़ देना चाहिए।

झूठ का ओढ़े मुलम्मा   सब यहां भरमा रहे।
उस खुदा की ज़ात से दिल जोड़ देना चाहिए।।

मुख्तारी- कानूनी अधिकार, मसरूफियत - व्यस्तता,
मुलम्मा - जामा।

46.
निईच्छा

हमनें तो बादशाहत की कभी ख्वाहिश ही नहीं की।
कोई पहचाने हमें ये भी कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

अब कौन हरा सकता है दुनिया में हमको ऐ खुदा।
जीतने की भी हमनें कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

ये रिश्तेदारी ये दोस्ती यारी पता नहीं ये तुम जानो।
इन सबकी भी हमनें कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

सब कुछ लुटा कर आये हैं तेरे दर पर ऐ खुदा।
ज़माने को भी जानने की कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

इसकी जायजद उसका रुतबा भाई ये सब तेरे मसले।
पाने को इन सबकी भी कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

इसका रूठना उसका मनाना ये फजीहत हम ना जाने।
मनाये कोई हमें भी कभी ख्वाहिश ही नहीं की।।

मैं रब का हूं रब मेरा है बस यही गुजारिश है मेरी।
बाकी दुनिया तुम जानों बस ये ही ख्वाहिश है मेरी।।

ख्वाहिशों नें था हमें सताया।
बना कर के अपना गुलाम।
अब सतायेंगे हम इनको।
बना कर के अपना गुलाम।।

47.
मुनाफिक लोग

मुनाफिक हैं जहां में सब दिलों की पीर क्या जानें।
नहीं रखते रहम दिल में नयन के नीर क्या जानें।।

नहीं डरते खुदा से ये खुदा भी बेच देते हैं।
नियत में खोट है इनकी सही तस्वीर क्या जानें।।

बड़े मगरूर रहते हैं खुदा खुद को समझते हैं।
खुदा जब रूठ जाये तो चलेगा तीर क्या जानें।।

मिला है आज तक जो भी खुदा की ही नवाजिश है।
बदल देता है पल भर में खुदा तकदीर क्या जानें।।

खुदा का नूर पहचानों जो' करता है जहां रौशन।
जहां में रहने की देता तुम्हें तदबीर क्या जानें।।

अभी भी वक्त है सुन ले खुदा की बात ऐ बन्दे।
झुका पेशानी तू अपनी बना दे मीर क्या जाने।।

दुनिया में सभी को सब इस्तेमाल कर रहे हैं।
मीठी छुरी से सभी को सब हलाल कर रहे हैं।
मतलब पड़ने पर तलवे भी चाट लेते हैं लोग।
या खुदा ये इंसान भी क्या कमाल कर रहे हैं।।

मुनाफिक- स्वार्थी, पेशानी - माथा, तदबीर – तरीका

48.
अपना गांव

घर-घर के आंगन में तुलसी पलती है।
फूल गुलाब चमेली बेला खिलती है।

गांव -गांव में बरगद नीम की छाया में।
यारों की बस हंसी ठिठोली मिलती है।।

ताल तलैया पानी के झरने देखो।
गैया भैंसी बकरी मिलकर चरती है।

तोता मैना और गौरैया तरुवर पर।
डाल-डाल पर खुश हो कर चहकती है।।

जगह-जगह चौपालें लगती गांवों में।
खलिहानों में हरियाली भी दिखती है।।

शहरों की आपाधापी में चैन कहां
पाता है ये मनवा आह निकलती है।।

कहे "नवीना" अपना अनुभव सखियों से।
जाना गांव ज़रूर तबियत खिलती है।।

लगे जब गांव का मेला बड़ा मन को लुभाता है।
खुले माहौल में घूमों बहुत आनन्द आता है।।
कहीं चूड़ी कहीं बिन्दी कहीं पर चाट है बिकती।
बड़ा सुंदर नज़ारा है गीत मन गुनगुनाता है।।

49.
खामोशी

खामोशी इक गहना है कोई गुनाह नहीं।
समझे कोई हमें ऐसी चाह भी नहीं।
बोलने का हुनर तो हम भी रखते हैं मगर।
बोल दिया तो फिर तुझे पनाह नहीं।।

अभी तक वो हमें समझा नहीं।
दर्द किया कभी भी साझा नहीं।
मिल जाये इक बार तो कह देंगे।
प्रेम की डोर हैं हम कोई माझा नहीं।।

इश्क करते हैं हम तुम्हें झूठा नहीं।
बसाया है दिल में तुम्हें झूठा नहीं।
यकीं तो करो तुम इक बार हमारा भी।
करते हैं हम याद तुम्हें झूठा नहीं।।

है कौन जहां में जिसमें खामियां नहीं।
अब हर सक्ष में तो खूबियां नहीं।
गलतियां तो होती हैं हर सक्ष से मगर।
फिर भी हम में वो मक्कारियां तो नहीं।।

खामोशी की भी अपनी इक ज़बां होती है।
कुछ ना कहते हुए भी नज़रों से बयां होती है।
ज़रा -ज़रा सी बात पर झल्लाता है। हर इंसान।
वर्ना इंसान के नसीब में खामोशी भी कहां होती है।।

50.
प्रेम चढ़ा परवान

मोहब्बत में तुमनें लुभाया न होता।
इशारों से हमको बुलाया न होता।।

यूं नज़दीक हम भी न आते तुम्हारे।
अगर हाथ तुमनें बढ़ाया न होता।।

न मिलते अगर सरे राह जो हमको।
उम्मीदों का दीपक जलाया न होता।।

यकीं हो चला है मुहब्बत पे तेरी।
अगर प्यार तुमनें जताया न होता।।

अगर तेरे दामन की हसरत न होती।
तो यूं ज़िन्दगी को लुटाया न होता।।

न चढ़ती ही परवान अपनी मुहब्बत।
अगर तुमनें दिल से निभाया न होता।।

किसी से मिल के' बढ़ जाये कशिश जीने की' ओ मनवा।
समझ लेना वही है प्रेम जीवन का असल गहना।
कभी खुद को समझ लेना कभी उसको समझ लेना।
जो' इक दूजे पे मिट जाये वही है प्रेम का जलवा।।

51.
मक़्सद ज़िन्दगी का

आदमी बस यूं ही जिये जा रहा है।
सफर यूं ही पूरा किये जा रहा है।।

ख़बर ही नहीं उसको मंज़िल की अपनी।
कहां जा रहा है वो क्यों जा रहा है।।

खुदा नें दिया उसको सुंदर सा जीवन।
मिलीं हैं जो स्वासें लिये जा रहा। है।।

बनाना था उसको इक सुन्दर सा जीवन।
पर दिल में जो आये किये जा रहा है।।

कुसंगत गुनाहों की दलदल में फंसकर।
प्याले नफरतों के पिये जा रहा है।।

जीवन उन्ही का मुबारक हुआ है।
जो प्रेम से सबको लिये जा रहा है।।

जीवन की बगिया में हैं फूल खिलते।
महक अपनी सबको दिये जा रहा है।।

है उपकार करता जो सबका जहां में।
हकीकत में वो ही जिये जा रहा है।।

हुनर अपना दिखाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।
तमन्नाएं दबी जो हैं उन्हें खुल कर बताओ तुम।
कहीं तुम खो न देना फिर जहां की भीड़ में खुद को।
समय रहते जहां को भी कलाकारी दिखाओ तुम।।

52.
प्रेम ही दर्द की दवाई हैं

आपनें जो करी भलाई है।
सादगी से वही निभाई है।।

प्रेम से है बना लिया अपना।
प्रेम ही दर्द की दवाई है।।

इस जहां में किसे फरागत है।
सिर्फ अपनी जगह बनाई है।।

लूट कर माल यूं दबाते हैं।
सबनें खाई यहां मलाई है।।

आशना जो कभी हमारा था।
आग उसनें ही सब लगाई है।।

हो नवाजिश खुदा तिरी हम पर।
हम सभी की यही दुहाई है।।

वो खुशी से नवाज़ता सबको।
कौन करता यहां भलाई है।।

क़दर कोई न समझे तो कभी हलकान मत होना।
हुनर की तुम कभी अपने बशर पहचान मत खोना।
ज़माना खुद भिखारी है क़दर हीरे की क्या जाने।
तुम्हें हल्का जो समझे तो हमारी मान मत रोना।।

फरागत- फुर्सत, आशना- दोस्त, नवाजिश - कृपा
हलकान - परेशान।

53.
सुहानी भोर

इक भोर सुहानी आई है।
फिर याद तुम्हारी आई है।
लेकर करवट मौसम नें।
ये कैसी ली अंगड़ाई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।

शीतल मन्द पवन की लहरें।
पुष्पों पर डोले हैं भंवरें।
सनन- सनन पवन ये कैसी।
मंद-मंद मुस्काई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।

मौसम बदला बदली काया।
नीलमणि सा रंग है छाया।
हर्षित होते खग- मृग देखो।
चिड़िया भी चहचहाई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।

कल-कल बहता नदियों का जल।
लहरें उसमें उठतीं चंचल।
सुन-सुन कर हलचल लहरों की।
शीतलता हृदय समाई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।

मधुबन में छाई बहार है।।
अंगड़ाई लेता ये प्यार है।
रंग बिरंगे फूलों पर तो।
छायी कैसी तरुड़ाई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।

झम झमाझम वर्षा होती।
आसमान से गिरते मोती।
प्रभु नें भी देखो ये कैसी।
कृपा अपनी बरसाई है।।
फिर याद तुम्हारी आई है।।
इक भोर सुहानी आई है।
इक नई जाग्रति लाई है।।

गीतों की माला हूं पिरोती।
आशा की जलती है ज्योति।
रंग बिरंगे फूल पिरोती।
सौ सजाऊं सुन्दर मोती।।

54.
अपेक्षा की उपेक्षा

वैसे तो इस संसार में भीड़ बहुत है।
पर फिर भी आज का हर इंसान
अकेला बहुत है।
देखने में तो ऐश ओ आराम सब कुछ
बहुत है ।   पर फिर भी भीतर से
एक गहरी निराशा और बेसुकूनी
बहुत है। कारण बड़ा ही सूक्ष्म है।
"और वो है संसार के प्रति अपेक्षा"
दुनिया की भीड़ में जाता है खुद को
अकेला लिए हुए। शायद मन खुश होगा।
पर जब वापस घर आता है इसी दुनिया
की भीड़ को वापस भीतर लिए हुए।
सोचा था लोगों के बीच में थोड़ा
सुकून मिलेगा।   अरे! पर ये क्या
जो थोड़ा सुकून मेरे पास था
वो भी गंवा आया।
धन दौलत मान प्रतिष्ठा वाह वाही
भी तो खूब कमा ली हमनें ।
क्या ज़हनी सुकून मिला। नहीं

मन भीतर से अभी भी कहता है
कुछ और है जो अभी भी बाकी है।

भरी शुष्कता जीवन में है।
मन को इससे उबारे कौन।
मिले गुरु यदि कृष्ण सरीखा।
मन अर्जुन फिर हो जाये मौन।।

इसका एक मात्र साधन है कि
खुद को उस प्रभु से जोड़ दो।
तुमने सभी के साथ खुद को
जोड़ने की पूरी कोशिश की।
परन्तु हर जगह खुद को
अधूरा पाया। करण

औरों से अपेक्षा और खुद की उपेक्षा।

तुम भूल गए कि ये भीड़ भी तो
उसी प्रभु की बनाई हुई सृष्टि है।
तुम भी तो उसी भीड़ का हिस्सा हो।
पहले उस रचनाकार को तो अपना
बना लो। रचना तो खुद ब खुद
तुम्हारी अपनी हो जायेगी।
"जिसका रब उसके सब"
सर्वत्र वही तो है क्या भीड़ क्या एकान्त
कोई जगह न तुझसे खाली है
तू व्यापक डाली डाली है।।

सृष्टि के कण-कण में वास तुम्हारा है।
सूरज चंदा तारों में आभास तुम्हारा है।
वसुंधरा की गोद में तू करता दुलार है।
घट-घट में बसता तू ही पालनहारा है।।

55.
जीवन का सत्य

मंदिर नित तुम जाते हो।
वहां घंटे खूब बजाते हो।
मिल जाये यदि अपना कोई।
फिर घंटों मिल बतियाते हो।।

लड्डू पेड़े   फूल जलेबी।
चढ़ा कर उन्हें रिझाते हो।
प्रभु तो रीझे हुए सदा हैं।
उन्हीं का दिया ही खाते हो।।

ऊठत बैठत जागत सोवत।
सदा बसत वो साथ हैं।
वो ही चुगाता वो ही खिलाता।
सर पर उसी का हाथ है।।

भाव बने ईश्वर में ऐसा।
वो तो भाव के भूखे हैं।
भाता नहीं दिखावा उनको।
घी   मेवे   भी रूखे   हैं।।

घी का दीपक जला उन्हें तुम।
मनौतियां   मनवाओगे ।
अंतर्मन इक ज्योत जला फिर।
भीतर ही सब कुछ पाओगे।।

छोड़ो बजाना घंटी अब तुम।
बस नत मस्तक तुम हो जाओ।
खुद ही खोजेंगे प्रभु तुमको।
भावों में तासीर तो लाओ।।

दिल में ईश्वर रम रहा, दिल में ही तू खोज।
बाकी सब कुछ वो करे, जप तू उसको रोज।
देह ईश उपहार है, जीवन का वरदान।
आठों याम तू भज हरी, हो मस्तक पर ओज।।

56.
भ्रष्टाचार

झूठों के सरदार कह रहे   सत्यमेव जयते।
बेईमानी भरमार कह रहे   सत्यमेव जयते।
माल गरीबों का खाते ये   उफ्फ नहीं करते।
भोंकें पीठ कटार कह रहे   सत्यमेव जयते ।।

चोरी मर्डर रेप करें पर   सत्यमेव जयते।
पर सम्पत्ति पर हाथ धरें पर सत्यमेव जयते।
याराना है नेताओं से   क्या बिगड़ेगा कोई।
माल देश का खूब हरें पर   सत्यमेव जयते।।

दफ्तर की दीवारें बोलें   सत्यमेव जयते।
घर आंगन चौबारे बोलें   सत्यमेव जयते।
झूठ बिक रहा जोरों पर बुजदिल मौन खड़े।
सुबह सुबह अख़बारें बोलें सत्यमेव जयते।।

नोटों से ये वोट खरीदें   सत्यमेव जयते।
वोटों की आंधी पर बैठें   सत्यमेव जयते।
नोट वोट में खोट भरी है तुम क्या जानो भाई।
खोटे सिक्के सर पर बैठे   सत्यमेव जयते।।

बड़ा गद्दार है वो नर जो भ्रष्टाचारी होता है।
कठिनतम दंड दो उसको वो नरसंहारी होता है।
दबाता माल है उनका जो हैं मज़लूम जीवन में।
सजा देता जो ऐसों को वो बाबा योगी होता है।।

57.
रक्षा बंधन

देखो राखी का त्योहार आता साल में इक बार।
होता भाई बहन का प्यार लाता खुशियां अपार।।

राखी बांधने बहना आती।
संग में खूब मिठाई लाती।
भैया करता है इन्तजार।
होता भाई बहन का प्यार।।

पूजा की थाली है सजाती।
रोली चंदन तिलक लगाती।
करे भाई को खूब दुलार।
होता भाई बहन का प्यार।।

राखी बांधे प्रेम से बहना।
देती दुआएं सदा खुश रहना।
आये खुशियों की बहार।
होता भाई बहन का प्यार।।

बंधन है राखी का ऐसा।
रेशम के धागों के जैसा।
जुड़ी रहे सदा ये तार।
होता भाई बहन का प्यार।।

हर रिश्ते में प्यारा रिश्ता।
होता भाई बहन का रिश्ता।
भैया मेरा बड़ा समझदार।
होता भाई बहन का प्यार।।

सदा मायके आती रहना।
भैया कहता मेरी बहना।
तेरा यहां पूरा अधिकार।
होता भाई बहन का प्यार।।

भैया है अनमोल दुआएं बहना देती।
रक्षा बंधन आज बलाएं सर से लेती।
भैया दे सौगात बहन तुम आती रहना।
रखना अपना हाथ सदा तुम सर पर बहना।।

58.
बेटियां

चिड़िया जैसी चहचहातीं बेटियां।
फूलों जैसी खिलखिलाती बेटियां।
बिन बेटी के घर तो सूना लगता है।
भंवरें जैसी गुनगुनाती बेटियां।।

मात पिता बेटों को पालें प्यार से।
सब पर अपना प्यार लुटातीं बेटियां।

पढ़ लिख कर वो अच्छे नम्बर लाती हैं।
मात पिता की शान बढ़ातीं बेटियां।।

पड़े ज़रूरत करतीं घर के काम भी।
बड़े-बड़े फिर यान उड़ातीं बेटियां।।

बेटी को बेटों से कम तुम मत समझो।
बन सैनिक हथियार उड़ातीं बेटियां।।

कभी कभी शैतानी इतनी कर जातीं।
खुद भी हंसतीं सबको हंसातीं बेटियां।।

मत बांधो तुम इनको चार दिवारी में।
अब तो पूरा देश चलातीं बेटियां।।

तोड़ो सारी बांधी हैं जो बेड़ियां।
झंडा भारत का फहरातीं बेटियां।।

बेटी बृह्मा की रचना है।
प्रेम भाव इनमें रखना है।
कितनी भी प्यारी हों बेटी।
विदा तो इक दिन करना है।।

59.
कन्या पूजन।

छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।
कंजक के चरणों को जल से धोया करती हूं।

हलवा पूरी से पूजन कर भोग लगाऊं मैं।
रोली टीका माथे पर सिन्दूर चढ़ाऊं मैं।
भेंटें गाकर माता की मैं रीझा करती हूं।।
छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।।

माता रानी सबकी झोली खुशियों से भर दे।
कोई भी हो कामना मां पूरण तूं कर दे।
ऐसी आशा माता रानी से मैं करती हूं।
छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।।

शेरों वाली माता रानी चमत्कार करती है।
सब भक्तो की बिन मांगे ही झोलियां भरती है।
हर दम माता रानी के शुक्राने करती हूं।
छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।।

कृपा दृष्टि मां हम पर रखना तेरा साथ रहे।
हम भक्तो के सर पर तेरा हर दम हाथ रहे।
झूम झूम कर मन्दिर तेरे आया करती हूं।।
छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।।

मैया का दरबार निराला सजा रही है दुनिया।
पायल घुंगरू बांध के नाचे छोटी छोटी मुनिया।
मैया तेरी लीला को मैं नमस्कार करती हूं।
छोटी छोटी कंजक की मैं पूजा करती हूं।।

भक्तो पर मां कर रही, निज करुणा बौछार।
भरती सबकी झोलियां, अन्त न पारावार।
तुझे पूजते मात हैं, बृह्मा विष्णु महेश।
मां दुर्गे नव रूप में, पधारतीं आगार।।

60.
आस्तीन के सांप

कुछ लोग तो नीचता में बड़े ऊंचे होते हैं।
कर जाते हैं हदें पार चर्चे भी गली कूचे होते हैं।।

झूठ पर सत्य का ओढ़े मुलम्मा भरमाते हैं सबको।
करते ये सच्चाई का दिखावा बड़े झूठे होते हैं।।

रिझा लेते हैं लोगों को बातें बड़ी -बड़ी बना कर के।
कर्म भी तो इनके क्या खूब बड़े निराले होते हैं।।

खौफ ए खुदा भी तो नहीं होता है इनमें जनाब।
खा कर कसम खुदा की खुदा को ही भरमा रहे होते हैं।।

मीठा-मीठा बोल कर ठगने वाले ऐसे बरखुरदार।
भरी है मक्कारी इनके भीतर मन के ये काले होते हैं।।

बच के रहना जीवन में तुम ऐसे मिष्ठान भंडारों से।
चूने के लड्डू पर चीनी की पर्त चढ़ायें होते हैं।।

गिर जाते हैं ऐसे लोग सभी की नज़रों से इक दिन।
परोसते हैं ख़याली पुलाव बातों में सिर्फ बड़े होते हैं।।

अपनी बारी का भी करना इन्तजार तूं ऐ नादां इंसान।
बुलाता है सभी को वो जो ना समझे वो बांवले होते हैं।।

कर्मों का है लेखा जोखा सारा।
जो बोयेगा सो पाना पड़ता है।
फिर -फिर इस दुनिया में बन्दे।
पलट के आना जाना पड़ता है।।

61.
हिंदी दिवस

हिंदी सर का ताज हमारे हिन्दी प्यारी भाषा है।
हिंदी में तुम सकुचाओ मत ये इसकी अभिलाषा है।।

हिंदी का सम्मान ना होता यही इसकी निराशा है।
अंग्रेजी के चक्कर में तुम करते क्यों तमाशा हैं।।

काम काज में अंग्रेजी को चाहे कहीं स्थान दो।
मत भूलो पर संस्कृति अपनी हिंदी को सम्मान दो।।

अंग्रेजी गानों को बच्चे झूम-झूम कर गाते हैं।
रिश्तेदारी में जब जाते हिंदी से सकुचाते हैं।।

कौवे कोयल की कहानियां सबनें दूर भगाईं हैं।
ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार नें अपनी जगह बनाई है।।

राम कृष्ण मीरा और तुलसी कबिरा रहीम सूर हैं।
ऋषि मुनियों की भाषा हिन्दी हिन्दी उनका नूर है।।

गीता वेद पुराण उपनिषद ज्ञान के भरे अम्बार हैं।
हिंदी में हम लेखन करते शब्दों के भंडार हैं।।

हिंदी में हम कविता लिखते दोहा रोला छंद चौपाई।
हिंदी के कारण ही देखो जगह पटल पर हमनें पाई।।

अंग्रेजी के अक्षर हैं साइलेंट कभी कहीं खो जाते हैं।
हिंदी की बिंदी भी बोले भाव समझ में आते हैं।।

हिंदी के माथे पर बिंदी उज्जवल रूप तुम्हारा है।
मां जैसी ये सहज सरल है कोटिक नमन हमारा है।।

शुद्ध पवित्र ज़बान है हिन्दी।
अपनेपन की शान है हिंदी।
सहज और सरलता इसमें।
भारत की पहचान है हिन्दी।।

62.
जीवन का सत्य

सारा जीवन इधर उधर की बातें तुम बतलाते हो।
याद कभी नहीं करते प्रभु को इसीलिए पछताते हो।।

आये कहां से कहां है जाना जन्म हुआ क्यों तुम्हारा है।
क्या करना है तुमको यहां पर मन में कभी विचारा है।।
जग अज्ञान अंधेरा सारा नहीं मारग फिर पाते हो।
याद कभी नहीं करते प्रभु को इसीलिए पछताते हो।।

नन्हीं -नन्हीं बूंदें गिरतीं करतीं तुमको इशारा हैं।
इतने ही पल का ही प्राणी बस जीवन ये तुम्हारा है।
क्षण भंगुर जीवन है तुम्हारा क्यों नहीं मन समझाते हो।
याद कभी नहीं करते प्रभु को इसीलिए पछताते हो।।

जग की माया खूब कमाई काम ना आयी तुम्हारे है।
अन्त समय में साथ ना जाती जेब ना होती किनारे हैं।।
जीत गये तुम जग से चाहे खुद की हार छिपाते हो।
याद कभी नहीं करते प्रभु को इसीलिए पछताते हो।।

जग से मुक्ति पाना चाहो प्रभु की शरण में आ जाओ।
भक्ति मिलेगी शक्ति मिलेगी परमानन्द को पा जाओ।
मीठा-मीठा नाम प्रभु का क्यों नहीं हरदम गाते हो।
याद कभी नहीं करते प्रभु को इसीलिए पछताते हो।।

सुन ले प्राणी ध्यान से , संत वचन अनमोल।
मीठी वाणी बोल कर, मन में रस तू घोल।
संत वचन में है भरा, सद्ग्रंथों का ज्ञान।
सार तत्व तू ले मनुज, लगे न पाई मोल।।

63.
भीतर भरा वैमनस्य

आज अगर आपसे कोई जलता है।
असल में ये ही तो आपकी सफलता है।।

होता नहीं है हुनर जिनके पास कुछ भी।
उन्हीं को दूसरों का मुकाम खलता है।।

देखते हैं जो शेखचिल्ली के सपनें सदा।
उन्हीं के ज़हन में जलन का कीड़ा पलता है।।

इसकी टोपी उसके सर उसकी टोपी इसके सर।
पहना कर के खुद को खुदा समझता है।।

रह जाता है आखरीन खाली हाथ वो।
कुल जहां उसी के हाथ से फिसलता है।।

जलन मत रख ऐ बंदे तू भी उसकी बराबरी कर।
अच्छे कर्मों का तो फिर अच्छा ही फल मिलता है।।

जलन इतनी भी मत पालो कि जीवन ही सुलग जाये।
सुधारो कर्म तुम अपनें समस्याएं सुलझ जायें।।
करो तुम प्रेम ईश्वर से वही तुमको मति देंगे।
समय रहते सम्भल जाओ तो दुनिया भी समझ जाये।।

64.
नमन मात पिता को

इबादत रियाज़त से क्या फायदा।
दुखाया जो दिल तूनें मां बाप का।।

ज़माने में कितना बढ़ो तुम मगर।
बढ़ेगा न रुतबा कभी आपका।।

बनाते हो कोठी बड़े शान से।
लगा जिसमें पैसा सदा पाप का।।

न की तुमने परवाह मां बाप की।
बनाया न कमरा किसी नाप का।

पड़े ग़र मुसीबत जो सर पर तिरे।
न होगा असर फिर किसी जाप का।

अगर चाहो जीवन में सुख भोगना।
असर उन पे ना हो फिर संताप का।।

जो रूठे अगर तुमसे मां बाप तो।
चलेगा पता तुमको औकात का।।

अभी भी समय है मना लो उन्हें।
न दो उनको मौका किसी श्राप का।।

नमक भोजन में पूरा हो स्वाद भोजन का बढ़ता है।
प्रेम घर में अधूरा हो सभी का भाव घटता है।
बड़ों का हाथ सर पर हो इज़ाफ़े खूब होते हैं।
बड़े होते नमक जैसे ज़ायका घर में रहता है।।

65.
करवा चौथ।   घनाक्षरी छंद

करवा त्योहार आया   खुशियां हज़ार लाया।
सजना का सजनी से   देखो प्यार हो गया।।

कल तक दोनों रूठे   आज खुशियां हैं लूटे।
सजना का सजनी से   मनुहार हो गया।।

रखे उपवास पूरा   रहे ना कभी अधूरा।
गौरा मैया को नमन   शत बार हो गया।।

चंदन तिलक मौली   फूलों से सजाई थाली।
सिंदूर से गौरां जी का   भी श्रृंगार हो गया।।

चांदनी मृगांक की भी   चम चम झांकती सी।
छलनी के पीछे चंदा   आर पार हो गया।।

चंद्रमा को अर्घ्य देवें   चंदा की बलाएं लेवें।
चंदा जी को हम पर   भी दुलार हो गया।।

करवा मैं सदा पूजूं   हर साल मेरे प्रभु।
आप जी का हम पर   वरदान हो गया।।

अमर सुहागता का   वर दिया गौरा मां नें।
मैया का "नवीना" पर   उपकार हो गया।।

आया करवा चौथ दिल, सबके मन उल्लास।
करें श्रृंगार नारियां, पिया मिलन की आस।।
रखतीं करवा चौथ में, सुहागिनें उपवास।
गौरां। मैया को नमन, पूरण करना आस।।

66.
करवा चौथ। गीत

मिल कर खुशी मनायें हम
करवा चौथ का दिन है आया।
झूमें नाचे गायें हम कि अज दिन
खुशियों वाला आया।।

झूम रहा है गगन खुशी से झूम रही है धरती।
करवा चौथ के दिन हैं आईं खुशियां छम छम करतीं।
फूले नहीं समाए हम चंदा देख हमें मुस्काया।
झूमें नाचे गायें हम कि अज दिन खुशियों वाला आया।।

घर-घर देखो चहल-पहल है नार सजे मतवाली।
चंदन रोली धूप दीप से सजे पूजा की थाली।।
चांद को अर्घ्य चढ़ायें हम कि सजना नें है वृत खुलवाया।
झूमें नाचे गायें हम कि अज दिन खुशियों वाला आया।।

मां गौरां की कृपा से सजना साथ रहे ये हमारा।
सदा सुहागन बनी रहूं मां सर पर हाथ तुम्हारा।
करवा साथ पुजायें हम मां नें सजना से मिलवाया।
झूमें नाचे गायें हम कि अज दिन खुशियों वाला आया।।

रोली चंदन धूप से, खूब सजाया थाल।
छलनी करवा हाथ ले, सॅग फूलों की माल।
आओ प्यारे चांद जी, करो नहीं अब देर।
भूख लगी मुझको बहुत, पेट हुआ बेहाल।।

67.
दो जून की रोटी

रोटी अब दो जून की

मिले नहीं आराम से

खाने की फुर्सत कहाँ

नाता है बस काम से॥

सुख नसीब में है नहीं

मेहनत कश इंसान के

मज़दूरी दिन भर करे

डिगे नहीं ईमान से॥

वैसे तो प्रभु नें हमें

दिये बहुत सामान

रोटी पर दो जून की

स्वयं   कमा इंसान॥

मज़दूरी हलधर करे

खेतों पर   निशि प्रात

स्वयं तड़पता भूख से

है अचरज की बात॥

कमा रहा हर आदमी

निज मेहनत के साथ

रिजक नहीं दो जून का

फिर भी उसके हाथ॥

मात पिता संग रहते थे तब।
मिलती थी बिन मेहनत रोटी।
कहते थे तब दादा-दादी।
मिले भाग्य दो जून की रोटी॥

68.
अदाकारी लफ़्ज़ों की

बयां तो लफ़्ज़ ही करते तुम्हारी तरबियत सारी।
ज़बां खोलो जो अपनी तो दिखे फिर असलियत सारी।।

कभी करना नहीं बातें मियां मिट्ठू से बन कर तुम।
नज़र फिर आयेगी सबको तुम्हारी सख्शियत सारी।।

बनाई साख जो तुमनें ज़माने में मशक्कत से
कहीं वो डूब ना जाये तुम्हारी मिल्कियत सारी।।

ज़हन में जो भरा भीतर वही तो तुम परोसोगे।
पता लग जाये लोगों को तुम्हारी ज़हनियत सारी।।

ज़बां को बंद ही रखना दबा कर मुंह मे तुम अपनें।
नहीं तो खोल देगी ये तुम्हारी वहशियत सारी।

अगर हिम्मत है तुममें तो गिरेबां झांक लो अपना।
दिखेगी फिर तिरे भीतर तिरी कंगालियत सारी।।

उछालो तुम न यूं कीचड़ पलट तुम पर भी आयेगी।
सताओगे किसी का दिल कसक तुमको रुलायेगी।
जहां देखो वहीं करता मनुज आलोचना सबकी।
बुराई खुद के भीतर की तुझे दर्पण दिखायेगी।।

69.
रोटी दो जून की

मिले दो जून की रोटी खुदा से ये गुज़ारिश है।
सभी का पेट भरता तू तुम्हारी ये नवाजिश है।।

खुदा को याद रखना तुम अरे नादान ओ बन्दे।
खुदा देता सभी को है रिजक उसकी ये बंदिश है।।

खुदा का नूर पहचानो रहम वो सब पर करता है।
नहीं करता कभी भी वो तुम्हारी आज़माइश है।।

अदा तुम शुक्र फिर करना सदा वो पालता तुमको।
तुम्ही खुद भूल ते वो तो रहम की करता बारिश है।।

कमाई तुम करो ऐसी भरा इमान हो जिसमें।
नहीं तुम पर कोई ग़म हो खुदा की भी ये ख्वाहिश हैं।।

बनाया है जहां जिसनें मुहाफिज़ भी तो वो ही है।
नहीं करता कभी वो तो किसी से कोई साजिश है।।

नहीं कुछ बात पूरी हो खुदा को दोष मत देना।
बुरे हैं कर्म तेरे ही खुदा की तो न रंजिश है।।

रोटी अब दो जून की, मुश्किल है श्रीमान।
महंगाई दानव बनी, आफत में है जान।।
नेता खाते रोज हैं, भर- भर थाली खीर।
पिसता रोज गरीब है, बिके नहीं जब धान।।

70.
दिलों पर हुक़ूमत

दिलों पर यूं हुक़ूमत हो गई है।
हमें भी अब मुहब्बत हो गई है।।

सुनायें अब किसे हम दास्तां ये।
तुम्हारी अब ज़रूरत हो गई है।।

दुआयें मांगते थे हम खुदा से।
खुदा की आज रहमत हो गई है।।

मुक़द्दस है हमारा इश्क तुमसे।
खुदा की अब इबादत हो गई है।।

फरेबी हैं जहां के लोग सारे।
फ़साना सुन अदावत हो गई है।।

तुम्हारा प्यार है तस्लीम हमको।
बड़ी नायाब किस्मत हो गई है।।

तुम्हारे साथ हैं महफूज़ हम भी।
ज़हन में आज राहत हो गई है।।

क़बूला है हमारा प्यार तुमनें।
हमारी अब हिफाज़त हो गई है।।

हमारी तुम्हारी मुलाक़ात होगी।
यहां पास आओ तभी बात होगी।
मिलेंगे कभी हम सवेरे सवेरे।
"नवीना" उसी रोज़ बरसात होगी।।

तस्लीम - स्वीकार, महफूज़ - सुरक्षित
मुक़द्दस - नायाब, अदावत- दुश्मनी।

71.
आज के बच्चे नहीं समझते

अपनें बच्चों की बातों को खूब समझना है।
उनकी भोली बातों में भी नहीं उलझना है।।

समझा देते हैं वो हमको बातों बातों में।
नींद हमारी उड़ जाती है हर दम रातों में।।
बातें बस पूरी हो उनकी यही अकड़ना है।
उनकी भोली बातों में भी नहीं उलझना है।।

समझाया कितना बच्चों को समझ नहीं आई।
दूध और बादाम खिलाये अक्ल नहीं आई।
ठोकर खाकर खुद सम्भलेंगे गिरते पड़ना है।
उनकी भोली बातों में भी नहीं उलझना है।।

प्यार उन्हें तुम कितना कर लो रास नहीं आता।
बातें बस पूरी हों उनकी यही उन्हें भाता।
सच्ची बात समझ नहीं आती यही झगड़ना है।
उनकी भोली बातों में भी नहीं उलझना है।।

करें निवेदन ईश्वर से हम बुद्धि उन्हें आये।
आदर करना सीखें सबका गुण प्रभु के गायें।
आगे चलकर प्रभु चरणों में इनको झुकना है।
उनकी भोली बातों में भी नहीं लझना है।।

बड़े क्या हो गये बच्चे कि उनके पर निकल आये।
दिया घर छोड़ आंगन फिर सभी बाहर निकल आये।
कमी क्या परवरिश में रह गई थी या खुदा मेरे।
तभी तो ग़ैर अपनों से बहुत बेहतर निकल आये।

72.
खुद में बदलाव

ज़िन्दगी जीने का नया अंदाज आ गया है।
लोगों का समझ अब मिज़ाज आ गया है।।

सहे हैं वक्त के थपेड़े हमनें भी खूब ऐ बशर।
करना लोगों को अब नज़र अंदाज़ आ गया हैं।।

चाहते थे जिन्हें हम दिल ओ जान से कभी।
आज नाहक उन्हें भी बहुत गुमान आ गया है।।

झांकने का दिलों में नहीं रखते थे हुनर हम।
अब तो निगाहों को पढ़ने का राज़ आ गया है।।

संग हमारे रहते हैं और हम ही को आज़माते हैं।
ऐसे दिखावों से मन भी अब तो बाज़ आ गया है।।

हो चला है यकीं अब तो उस खुदा की ज़ात पर।
अब तो खुद ही खुद पर हमको नाज़ आ गया है।।

हमारी एहमियत को जानते हैं खूब बस हम ही।
ज़माना साथ क्या देगा निभाते साथ हैं ग़म ही।
बड़े नादान थे हम तो भरोसा कर लिया तुम पर।
ग़मों के साथ अब रहते मिले आराम हर दम ही।।

73.
प्यारी गुड़िया रानी

टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आयी।
छुक-छुक छुक-छुक रेल चलायी।
खेल खिलौने खेले सारे।
टन-टन- टन घंटी बजाई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

मम्मी पापा लाड़ लड़ायें।
बाहों में भरकर उठायें।
देखो गुड़िया खिलखिलाई।
हंसी ज़ोर की सबको आई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

जन्म दिवस गुड़िया का आया।
केक काट कर खूब मनाया।
कैंडल पर फिर फूंक लगाई।
ताली सबनें खूब बजाई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

गुड़िया के घर बच्चे आये।
सुंदर से उपहार भी लाये।
मम्मी पापा लाये मिठाई।
सबको जम कर खूब खिलाई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

गुड़िया रानी बड़ी सयानी।
दादा-दादी की है रानी।
दादू प्यार से चपत लगाई।
दादी खिलाये दूध मलाई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

नाना-नानी की अब बारी।
गुड़िया उनकी बड़ी दुलारी।
सबनें मिल फोटो खिंचवायी।
गुड़िया मैडम भी मुस्काई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

बुआ फूफा मामा मामी।
सब देते गुड़िया को सलामी।
डी जे पर फिर धूम मचाई।
मिलकर सबनें दी बधाई।।
टुक-टुक टुक-टुक गुड़िया आई।।

74.
मजदूर दिवस

मजदूर हैं हम मजबूर नहीं।
मेहनत करते हैं गुरूर नहीं।
प्रभु की रज़ा में राज़ी रह कर।
मेहनताना लेते फ़िज़ूल नहीं।।

झोपड़ पट्टी में हम रहते हैं।
जो बन आये वो सहते हैं।
रूखी सूखी खाय मगन हो।
शुक्राने प्रभु के करते हैं।।

जैसे अफसर जाते दफ्तर।
हम भी जाते हैं खेतों पर।
तुम तो ए सी में बैठे हो।
काम करें हम अपने दम पर।।

कैसे आग जले चूल्हे में।
दिन भर चिंता करते हैं।
भाग्य भरोसे नहीं बैठते।
जो काम मिले वो करते हैं।।

मजदूरो की दशा देखिये।
नंगे पांव सड़क पर चलते।
पालन पोषण करने घर का।
खून पसीना एक हैं करते।।

बड़े मजबूर होते हैं हम।
जब दिहाड़ी भी नहीं होती।
आवश्यकता पूरी करने को।
चाहिए थोड़ी रकम भी मोटी।।

ज़रूरतें हम मजदूरों की भी।
कभी तो सोचो मेरे आक़ा।
हम मजदूरों के लिए भी।
कभी तो बनाओ कोई ख़ाका।।

किसानों की अरज सुन लो सभी का पेट भरते है।
सुबह से शाम खलिहानों पे अक्सर काम करते हैं।
सुनो सरकार तुम उसको सही कीमत तो दिलवा दो।
सही कीमत न मिलने से ज़हर खा फिर वो मरते हैं।।

75.
हुक़ूमत

बेवजह हलकान करती है हिदायत आपकी।
नागवारा है हमें भी ये शिकायत आपकी।।

बात मानें हम सदा ही बस यही तुम चाहते।
अब मुसलसल ना चलेगी ये हुक़ूमत आपकी।

है इरादा मुस्तकिल ना अब गिरेंगे हम कभी।
चल न पायेगी कहीं पर अब वकालत आपकी।

भावनाओं को उछाला इक खिलौना जानकर।
साथ देगी ना कभी भी अब इबादत अपकी।

दिल दुखाते हो हमारा जान कर मज़लूम तुम।
चल न पायेगी ज़रा भी ये हिमाकत आपकी।

चाह कर भी मानना मुमकिन नहीं है अब सनम।
अब कभी भी काम ना आये सदाकत आपकी।।

यूं दिलों से खेलना है काम आसां भी नहीं।
मार देगी खुद सदा नापाक आदत आपकी।।

खूब धोखा दे रहे हो तुम खुदा की ज़ात को।
अब किसी को भी न होगी फिर ज़रूरत आपकी।।

किसी को कष्ट देकर तुम कभी अभिमान मत करना।
सता कर के रुला कर के उसे हलकान मत करना।
करेगा ज़िक्र वो तेरा खुदा के सामने जब भी।
खुदा रौंदेगा तुमको फिर ये मन हैरान मत करना।।

हलकान - परेशान, मुस्तक़िल- पक्का, मज़लूम- दुखी
सदाक़त- सच्चाई।। मुसलसल- लगातार।

76.
सत्य की राह

सत्य की राह हर दम चला कीजिए।
छल कपट से हमेशा बचा कीजिए।

साथ देता न कोई किसी का यहां।
ज़िन्दगी में अकेले बढ़ा कीजिए।।

ज़िन्दगी खूबसूरत बने तब तलक।
जब तलक उसकी हां में जी हां कीजिए।।

मतलबी इस जहां की हकीकत यही।
दिल से उनको हमेशा दफा कीजिए।।

कर्म ऐसा करो इस जहां में बशर।
माफ दिल से सभी को सदा कीजिए।।

वक्त रहते खुदा नें बचाया हमें।
शुक्र उसका हृदय से अदा कीजिए।।

हैं मुहाफिज़ मिरी ज़िन्दगी का खुदा।
अब "नवीना" खुदा को झुका कीजिए।।

सत्य की राह ही ईश वरदान है।
झूठ पर चल रहे लोग नादान हैं।
कर्म सुंदर करो इस जहां में बशर।
कर्म से ही जहां में बनी शान है।।

77.
मज़ा ज़िंदगी का

ज़िन्दगी में कभी तो मज़ा कीजिए।
आते जाते कभी तो मिला कीजिए।

मिलने जुलने से रिश्ते जवां रहते है।
प्रेम से मिल के रिश्ते जवां कीजिए।।

काम धंधों में मशगूल रहते सभी।
वक्त यारों को भी तो दिया कीजिए।।

याद कर लो वो बचपन के दिन तुम कभी।
उन्हीं यादों को फिर से जिया कीजिए।।

कल न जाने कभी कौन होगा कहां।
काम धंधों को थोड़ा दफा कीजिए।।

मन की बातें करें आओ मिल कर सभी।
कुछ सुना दीजिए कुछ कहा कीजिए।।

मिल के बैठो सभी तुम कभी ना कभी।
जाम मस्ती का घुट घुट पिया कीजिए।।

प्रेम खुद से करो इतना नूर मुखड़े पे आ जाये।
बने जीवन बहुत सुंदर कि ईश्वर में समा जाये।
बहुत परवाह की तुमनें हमेशा से ज़माने की।
करो परवाह अब खुद की खुदी में बस जिया जाये।।

78.
इक राधा इक मीरा

इधर राधा जु प्यारी है उधर मीरा दीवानी है।
तड़प चातक पपीहा सी मिलन उनका रुहानी है।।

मिलन की आस दोनों को सताये रात दिन ऐसे।
नयन राधा भिगोती है मगर मीरा सयानी है।।

लिये तस्वीर हाथों में प्रतीक्षा कर रहीं दोनों।
मगर विश्वास है गहरा प्रीत तो आसमानी है।।

बड़ा संतोष धन उनमें मिलन की आस बस रहती।
बसे हैं श्याम दिल में तो सॅजोई वो निशानी है।।

बड़ी निर्भीक थीं दोनों डरीं ना इक परीक्षा से।
उन्हें विश्वास था पूरा लगन अपनी पुरानी है।।

बसे दोनों के तन मन में सदा जगदीश हैं ऐसे।
खिलीं माधव के रंग में द्वय चढ़ी रंगत नुरानी है।।

सज धज कर दोनों मिले प्रेम चढ़ा परवान।
मिलकर दोनों में बसी इक दूजे की जान।
खो कर प्रिय सानिध्य में मिला परम आनंद।
पहुंच गए फिर रूह तक भक्तो के भगवान।।

79.
शिकवे शिकायत ही अवसाद का कारण है।

मत कर तू शिकवे शिकायत लत बढ़ जाती है।
धीरे-धीरे ज़बान की लज़्ज़त बढ़ जाती है।।

मन- मुटाव बढ़ते बढ़ते फिर झगड़े होते हैं।
धीरे-धीरे इक दिन फिर ज़िल्लत बढ़ जाती है।।

करे गुमान है खुद पर खुद को खुदा समझता।
धीरे-धीरे सबसे फिर नफरत बढ़ जाती है।।

सच व झूठ की नैया में गोता खाते खाते।
धीरे-धीरे उस पर तोहमत बढ़ जाती है।।

उठ जाओ शिकवों से ऊपर रब भी राज़ी होगा।
धीरे-धीरे जीवन में तहनियत बढ़ जाती है।।

औरों से उम्मीद हटा कर खुद पर ध्यान लगाओ।
धीरे-धीरे सबसे फिर चाहत बढ़ जाती है।।

सजदे कर तूं उस रब को वो सबकी सुनता है।
धीरे-धीरे रब की फिर रहमत बढ़ जाती है।।

हमें विश्वास है खुद पर कृष्ण हिम्मत दिलायेंगे।
नहीं तोड़ेंगे दिल अपना जुगत कोई करायेंगे।
बने फिर सारथी भगवन उठाया चक्र उंगली पर।
दिलाने जीत अर्जुन को कृष्ण धरती पे आयेंगे।।

तहनियत - शुभकामनाएं, तोहमत - इल्जाम।

80.
गुरु शिष्य का अद्भुत नाता

समय मिला है भीतर जाओ।
थोड़ा अन्तर्मुख हो जाओ।
यही समय है खुद को जानो।
खुद से आत्मसात हो जाओ।।

इधर उधर बस भटक रहे हो।
सुख को बाहर खोज रहे हो।
भरे भंडार हैं सुख के भीतर।
भीतर क्यों नहीं झांक रहे हो।।

रोज़ की आपाधापी में तुम।
समय अनमोल गंवाते हो तुम।
कभी तो सोचो कभी विचारो।
प्रभु को क्यों बिसराते हो तुम।।

हरि नें फिर सतगुरु मिलवाया।
कृपा करी गुरु शिष्य बनाया।
गुरु शिष्य का अद्भुत नाता।
गुरु नें मेरा भ्रम तुड़वाया।।

गुरु सानिध्य में जब से आये।
ज्ञान की गंगा में गोते लगाये।
गुरु नें ज्ञान ध्यान से भीतर।
श्री हरि जी के दर्श करवाये।।

अब मित्र बनाया खुद को मैंने।
आत्म विष्लेषण किया है मैंने।
सच्ची खुशियां मिलीं अनमोल।
जब से हरि को जाना मैंने।।

दुनिया में उसनें सबसे बड़ी बात कर ली।
जिसनें खुद अपने आप से मुलाकात कर ली।।

81.
कृष्ण जन्माष्टमी छंद चौपाई "गीतिका"

दीपक एक जलाने आये।
उजियारा फैलाने आये।

राही जो जन भटक गये थे।
राह उन्हें दिखलाने आये।

प्रकट भरे हैं कृष्ण कन्हैया।
हम सबको हर्षाने आये।।

आस लगाई थी हर जन नें।
तृष्णा आज मिटाने आये।

दरस किये सब बंधन छूटे।
संशय दूर भगाने आये।।

पलने सखियां खूब झुलावें।
मन सबका परचाने आये।।

बाल काल माटी को खा कर।
तीन लोक जनवाने आये।।

माखन मिश्री मुख लपटावें।
सभी का दिल चुराने आये।।

ग्वाल बाल सॅग खेला करते।
गऊंए खूब चराने आये।।

राधा सखियां पीछे भागें।
सबसे रास रचाने आये।।

तोड़ दिया फिर अहं इंद्र का।
गोवर्धन उठवाने आये।।

जब जब हुई धर्म की हानि।
चक्र सुदर्शन चलाने आये।।

घर-घर बजे बधाई है।
देखो जन्में कृष्ण कन्हाई।
बाजी अब शहनाई है।
घर-घर में खुशहाली छायी।।

82.
सच्चा हृदय सच्ची मुस्कान

सदाकत दिल में जब मेरे इबादत की ज़रुरत क्या।
नज़ारों में बसे हो तुम मुहब्बत की ज़रूरत क्या।।

फरेबी लोग हैं सारे किसी का साथ ना देते।
खुदा जब साथ है मेरे हिफाज़त की ज़रुरत क्या।।

इरादा मुस्तकिल अपना तुम्हारा साथ देंगे हम।
ज़माने से नहीं डरना वकालत की ज़रुरत क्या।।

सताना मत किसी मज़लूम का तुम दिल कभी जाना।
दुआओं से नवाज़े रब अदावत की ज़रुरत क्या।।

गंवारा अब नहीं हमको परेशां तुम रहो यूं ही।
सभी कुछ पास है अपने ज़रूरत की ज़रुरत क्या।।

सजायेंगे मुहब्बत का सुनहरा आशियां अपना।
रहेंगे प्यार से मिलकर शिकायत की ज़रुरत क्या।।

सच्चे रिश्तों को कभी सम्भाला नहीं जाता।
ऐतबार को यूं ही उछाला नहीं जाता।
खुदा जान कर चाहते हैं हम जिनको।
दिल से फिर उन्हें निकाला नहीं जाता।।

सदाकत - सच्चाई, मुस्तकील- पक्का, मज़लूम - दुखी।
इबादत - पूजा, अदावत - दुश्मनी।

83.
महत्ता ईश्वर की

सब कुछ हमको मिल जाता है।
ईश्वर के मिल जाने से।।
मन भी अपना मुस्काता है।
प्रभु की महिमा गाने से।।

दुनिया से क्या दिल परचाना।
दुनिया तो खुद सूनी है।।
ग़म भी सारे मिट जाते हैं।
ईश्वर में मिल जाने से।।
मन भी अपना मुस्काता है प्रभु की महिमा गाने से।।

दुनिया तो बस धोखा देती।
खुद पर तुम विश्वास करो।।
खुद को शक्ति खुदा से मिलती।
खुद विश्वास जगाने से।।
मन भी अपना मुस्काता है प्रभु की महिमा गाने से।।

मन तो अपना भोला- भाला।
कोई भी ठग लेता है।।
बात "नवीना" की सुन ले मन।
बच खुद को ठगवाने से।।
मन भी अपना मुस्काता है प्रभु की महिमा गाने से।।

प्रभु नें ये संसार बनाया।
सुख सुविधा दी मानव को।
सुख सुविधा ले कतराता फिर।
प्रभु के मंदिर जाने से॥
मन भी अपना मुस्काता है प्रभु की महिमा गाने से॥

ईश्वर को तू सखा बना वो।
सारथी बन जाते हैं।
करते फिर वो रक्षा तेरी।
इस मतलबी ज़माने से॥
मन भी अपना मुस्काता है प्रभु की महिमा गाने से॥

खोली है खिड़की खुदा नें नसीब की।
बान मांगे भर दी है झोली गरीब की।
ठोकर जो मारे ये दुनिया तो क्या है।
यारी है अपनी खुदा से करीब की॥

84.
श्री राम महिमा

राम नाम अति प्यारा है।
वो जग का पालन सारा है।
राम नाम की महिमा ऐसी।
कष्ट निवारण हारा है।।

राम नाम शबरी नें ध्याया।
झूठे बेर खिलाये थे।
करी प्रतीक्षा जीवन भर तब।
राम जी चल कर आये थे।।

वाल्मीकि नें राम को पाया।
उल्टा नाम जपा कर के।
रविदास भी संत हुए फिर।
कठौते में गंगा बहा कर के।।

रावण को भी समझाया था।
करो ना उल्टे काम कभी।
तुम तो खुद ज्ञानी ध्यानी हो।
करो नहीं अहंकार कभी।।

धनुष तोड़ शिवजी का वो तो।
सीता के भरतार हुए।
पांव धरा जब राम सिला पर।
अहिल्या के तब भाग जगे।।

पाप मुक्त धरती को कर के।
दानवों का उद्धार किया।
राम नाम जिसने भी जाना।
उसी का बेड़ा पार हुआ।।

राम से तू प्रीत कर ले आत्मा हो जायेगा।
सर झुका कर देख ले परमात्मा हो जायेगा।
माया के बंधन हैं झूठे मतलबी संसार में।
बंधनों का देख फिर तू खात्मा हो जायेगा।।

85.
अर्ज़ किसानों की

किसानों की अरज सुन लो सभी का पेट भरते हैं।
सुबह ओ शाम खलिहानों पे अक्सर काम करते हैं।।

किसानों की ज़रूरत को कभी तो भांप लो आक़ा।
किसानों को खुशी हो तो खुदा ग़म दूर करते हैं।।

थके हारे कृषक बैठे धरा पर भूख से व्याकुल।
निवाला तोड़ कर खाते रिजक हाथों में रखते हैं।।

किसानों की वजह से ही है रौशन नाम दुनिया में।
ज़रा सी ग़र तवज्जो दो तो उनके घर सॅवरते है।।

बड़ा मजबूर होता है दिहाड़ी जब नहीं होती।
वहीं मायूस हो कर फिर गरीबी से वो लड़ते है।।

खिलौने खील लेकर के वो जब भी घर को जाता है।
खिलौने देखकर बच्चे भी उनके मुस्कुराते हैं।।

बड़ा मायूस हो कर के गगन की ओर ताकता है।
सही वर्षा न मिलने से सूख खलिहान जाते हैं।।

अगर वर्षा बहुत हो तो भी बाढ़ें खूब आतीं हैं।
अधिक पानी के बढ़ने से खेत सब डूब जाते हैं।।

सुनो सरकार तुम उनको सही कीमत तो दिलवा दो।
सही कीमत न मिलने से ज़हर खा फिर वो मरते हैं।।

मन अगर उदास हो कोई भी ना पास हो।
खाने को ना ग्रास हो जीने की ना इस हो।
मात्र इक विश्वास हो।
समझ जाना प्रभु सब बेहतर करेंगे।।

86.
प्रभु कृपा

बिन जामन के दही ना जमता।
रिश्तों में रही कहां है ममता।
आपस में तकरार भरी है।
प्रेम बिना जीवन ना पनपता।।

पर्यावरण दिवस तुम मनाओ।
जगह-जगह तुम वृक्ष लगाओ।
बिना खाद जल वृक्ष ना बढ़ता।
सेवा देकर इन्हें बढ़ाओ।।

मात पिता रहते जिस घर में।
खुशहाली रहती उस घर में।
आशीष उनका सदा ही मिलता।
संस्कारी बच्चे हों फिर घर में।।

बागों में फैली हरियाली।
कोयल कूके डाली डाली।
बिन माली के बाग न खिलता।
फूलों से रहती खुशहाली।।

मेहनत बंदा हर दिन करता।
बिनु हरि कृपा काम नहीं बनता।
प्रथम प्रभु तुम हर दम रखना।
फिर देखो हर काम है सरता।

सार तत्व को जान ले बंदे।
ईश्वर को पहचान ले बंदे।
देखें सबको खुद नहीं दिखता।
महिमा बस तू गा ले बंदे।।

सृष्टि का सम्पूर्ण रचनाकार वही है।
सम्पूर्ण कलाकारी का कलाकार वहीं है।
बना के नक्शा छिप गया भीतर।
ढूंढे जो उसको सच्चा आत्माकार वहीं है।।

87.
आज की पीढ़ी

आज की पीढ़ी को घर अपना बनाने दीजिए।
जानकारी है बहुत खुद ही सजाने दीजिए।।

घर बनाया बाप नें बीवी को वो भाता नहीं।
चाहते रहना अलग वो छोड़ जाने दीजिए।।

क्या पता था दूर जाकर भूल जायेंगे हमें।
याद हम भी क्यों करेंगे भूल जाने दीजिए।।

साथ रहना चाहते मां बाप के वो है नहीं।
दूर रह कर आप भी अनुभव कमाने दीजिए।।

दूध में बादाम देकर भी खिलाया था उन्हें।
अक्ल फिर भी ना बनी ठोकर से आने दीजिए।।

हम दुआ फिर भी करेंगे खूब तुम फूलो फलो।
या खुदा तकदीर उनको आज़माने दीजिए।।

बड़े अगर अपने बच्चों से ख़ौफज़दा हैं।
समझ लेना खुद के ही घर में गुमशुदा हैं।
करी थी तरबियत जिनकी दिल ओ जान से।
वही कहते हैं आज ये क्यों हमारे दरमियां हैं।।

88.
मश्विरा

अगर कुछ मश्विरा तुमने हमीं से कर लिया होता।
तुम्हें भी इश्क का कुछ तो नया अनुभव हुआ होता।।

यकीं कर लो हमारा तुम तुम्हारे हमनवां है हम।
कभी हमसे भी मिलने का तुम्हारा मन किया होता।।

तुम्हारी सादगी पे हम हमारा दिल लुटा बैठे।
तुम्हारे दिल में भी हम सा कोई पागल जिया होता।।

दिये जो ज़ख्म तुमनें थे धरें दिल में सभी वैसे।
कभी तुमनें भी आशिक बन ज़हर कुछ तो पिया होता।।

तुम्हारा दिल बयां करता कभी तो इश्क को मेरे।
कभी अपने भी जीवन में हमें शामिल किया होता।।

अगर तुम मानती कहना हमारी दिलरुबा जानम।
तुम्हारे दिल का टुकड़ा बन तुम्हारा ही मियां होता।।

तुम्हारे पास आने का बहाना ढूंढ़ता है दिल।
तुम्हारे दिल में रहने का ठिकाना ढूडंता है दिल।
बड़ी उलझन हमारी है बताऊं क्या तुम्हें जानम।
तुम्हारे इश्क में पागल ज़माना ढूडंता है दिल।।

89.
पहले की और आज की शादियां

वो भी क्या ज़माने थे फसाने ही फसाने थे।
लगा कर टैंट गलियों में हो जाती थीं शादियां।

हुआ करते थे मेज़बान मुहल्ले के ही लोग सब।
सज धज कर मेहमान सभी जीमते थे थालियां।

रंग बिरंगी झंडियों से सजता था पूरा मुहल्ला।
रौनकों में बच्चे खेलें बजा-बजाकर तालियां।।

हलवाई बैठा करते थे महकता था सारा अहाता।
लड्डू मठरी बालूशाही गरमा-गरम जलेबियां।।

लगाकर लाउडस्पीकर तेज़ गाने खूब बजाते थे।
शोर शराबों के भीतर भी कर लेते थे पढ़ाईयां।।

कार्ड मिठाई संग सभी को घर-घर देने जाते थे।
प्रेम प्यार से गले लगाकर सब देते थे बधाईयां।।

हाय ज़माना कैसा आया शुष्क-शुष्क हो गये सभी।
वाट्सअप पर कार्ड भेज कर फ़र्ज़ अपना निभाते हैं।।

फलां- फलां होटल पर आना सब प्रोग्राम वहीं पर हैं।
रूखे सूखे से निमंत्रण सबको यही बताते हैं।।

बड़े -बड़े अब होटलों में करते हैं सब शादियां।
मानों हो प्रतियोगिता कोई शान ओ शौकत दिखलाते हैं।।

बात पते की सुन लो सखियों।
अर्ज़ "नवीना" करे निराली।
आ जाये जो रास अगर तो।
मिल के बजाओ सारे ताली।।

आपस में मिल जुल कर दोनों।
पाणिग्रहण संस्कार करो तुम।
मंदिर में फेरे डलवा कर।
बच्चों का उद्धार करो तुम।।

९०.
नज़र पारखी रखिये।

औरों के नज़रिए से ना परखा जाये हमें।
कुछ वक्त साथ रह कर फिर चुना जाये हमें।।

सदाकत ही सदाकत है किरदार में अपनें।
कितना भी औज़ारों से तराशा जाये हमें।।

ख़ामोश रहकर हम भी देखते हैं सबके मंसूबे।
कामयाब न होने देंगे कितना भी उछाला जाये हमें।।

बदनाम ना हो जाना तुम हमें बदनाम करते करते।
ऐसा ना हो तुम्हारे ही खिलाफ भड़काया जाये हमें।।

सम्भाल कर रखना तुम भी अपने किरदार को ऐ दोस्त।
देख न पाओगे खुद को जो बुलंदियों पर चढ़ाया जाये हमें।।

हिम्मत है तो सुन लिया करो अपनें खिलाफ कुछ बातें।
खामखां इस क़दर बदनाम ना कराया जाये हमें।।

बता कर खामियां मेरी फ़रिश्ते खुद बन जाते हैं।
हमें वो ज्ञान देते हैं कि बिगड़े जिनके खाते हैं।।
ग़लत फहमी वो रखते हैं सदा खुद के हि बारे में।
खुले जब पोल उनकी तो वहीं नज़रें चुराते हैं।।

९१.
तस्वीर ख़यालों की।

थी ख़यालों में बसी तस्वीर आधी रह गयी।
ख्वाब में देखी थी जो ताबीर आधी रह गयी।।

कोशिशें भी की बहुत पर याद वो आयी नहीं।
क्या बताऊं यार मैं तदबीर आधी रह गयी।।

इश्क में आगे बढ़ा था झोलियां भरनें को थीं।
ख्वाब टूटा इस क़दर जागीर आधी रह गयी।।

बात में कुछ दम न था कहता किसे मैं ऐ बशर।
कह रहा था दास्तां तासीर आधी रह गयी।।

चाहते थे हम बनाना याद में उनके महल।
बन सका ना वो महल तामीर आधी रह गयी।।

क्या लिखूं मैं ख़त "नवीना" सामनें सूरत नहीं।
याद करता हूं मगर तहरीर आधी रह गयी।।

तुम्हारे पास आना चाहता हूं।
तुम्हें दिल में बसाना चाहता हूं।
तुम्हारे इश्क में पागल हुए हैं।
तुम्हें दिल में सजाना चाहता हूं।।

ताबीर - स्वप्न की व्याख्या, तदबीर - योजना,
तहरीर - लिखावट, तासीर - असर, तामीर - निर्माण।

92.
प्रेमी का प्रेमिका को मनाना

आज हमसे दिल लगाना चाहता है।
बात कुछ अपनी बताना चाहता है।

अब नहीं है इख्तियारे दिल उसी का।
ज़ख्म दिल के वो दिखाना चाहता है।।

राह में कब से खड़ा है वो हमारी।
आज हमको फिर रिझाना चाहता है।।

कह दिया हमनें नहीं है वास्ता अब।
वो मगर फिर भी मनाना चाहता है।।

इल्तिज़ा फरमा रहा है वो हमीं से।
पास अपने अब बुलाना चाहता है।।

ख्वाब में उल्फत उसी के हो रही है।
अब शिकायत भूल जाना चाहता है।।

कह रहा है तुम हमारे बाग़बां हो।
बाग़ इक सुन्दर सजाना चाहता है।।

हो नवाज़िश आपकी तो पास आऊं।
गीत फिर कुछ गुनगुनाना चाहता है।।

अब बयां कितनी करेगा वो सताइश।
दिल चलो अब मान जाना चाहता है।।

रूठे थे कब से आज मना कर चले गये।
इक ख्वाब ज़िन्दगी में सजा कर चले गये।
हमको यक़ीं नहीं था मिलेंगे वो इस तरह।
बेचैनियों को फिर से बढ़ा कर चले गये।।

इल्तिज़ा - गुहार, इख्तियारे - बस में,
सताइश - तारीफ, नवाज़िश - आज्ञा।

93.
इश्क पर शोध

इश्क हम भी करेंगे कभी ना कभी।
हम भी बरबाद होंगे कभी ना कभी।।

जान पहचान तुमसे बढ़ा लें अभी।
हम भी तुम पे मरेंगे कभी ना कभी।।

लोग कहते हैं मीठा बड़ा जाम है।
पी के देखेंगे हम भी कभी ना कभी।।

खुद मिटोगे तभी इश्क पाओगे तुम।
तब तो मर हम मिटेंगे कभी ना कभी।।

हो न बदनाम जाना ज़रा सोच लो।
खुद पे इल्ज़ाम लेंगे कभी ना कभी।।

आखरीं इश्क करता बड़ा ज़ुल्म है।
ज़ुल्म खुद ये सहेंगे कभी ना कभी।।

दास्तां इश्क की हमको मंज़ूर है।
इश्क अब तो करेंगे कभी ना कभी।।

अब मिले ग़र हमें भी हसीं हमसफर।
फिर तो हम भी लुटेंगे कभी ना कभी।।

इश्क करेंगे सच्चा हम तो।
साथ जियेंगें साथ मरेंगे।
ज़ख्म मिलेंगे दुनिया से जो।
मिल बैठकर उन्हें सियेंगे।।
बहुत हो गये शिकवे अब तो।
प्रेम प्याला बैठ पियेंगे।।

९४.
खुद्दारी खुद से

रख कर पांव किसी के सर पर खुद को कभी चढ़ाया नहीं।
दुखती रग पर नमक लगाकर खुद को कभी बढ़ाया नहीं।

होते हम भी खड़े आज उन बुलंदियों पर जनाब।
बेवजह किसी के आगे हमनें सर अपना झुकाया नहीं।।

सदाकत ही सदाकत रखते हैं किरदार में अपनें सदा।
खामखां किसी मज़लूम को हमनें कभी रुलाया नहीं।।

लोग तो बेवजह शक करते हैं हमारी ईमानदारी पर।
बा खुदा कभी भी हमारा ईमान डगमगाया नहीं।।

रूठ जाते हैं ज़रा ज़रा सी बात पर ये दुनिया वाले।
करते हैं हसद वो हमसे हमनें भी कभी उन्हें मनाया नहीं।।

कहते हैं लोग हमसे आप तो मग़रूर हुए जाते हैं।
कैसे बतायें हम उन्हें उस खुदा को हमनें कभी भुलाया नहीं।।

आइये आप भी शामिल हो जाइये हमारी इस सदाकत में।
फिर ना कहना अपनें तो कभी हमें बुलाया नहीं।

बड़ा रहम दिल है मेरा खुदा कर देता मुआफ खतायें सभी।
झुका ले सर तू अपना उसनें खताओं को कभी भुनाया नहीं।।

धूल धोखा धक्का ही मिले इस मतलबी संसार में।
फूंक फूंक कर रख क़दम इस मतलबी संसार में।
जानो तुम खुदा की शक्ति आत्म निर्भर खुद बनो।
ठगे रह जाओगे वर्ना तुम इस मतलबी संसार में।।

95.
प्रभु पर अडिग विश्वास

मन कभी उदास हो कोई भी ना पास हो।
खाने को ना ग्रास हो जीने की ना आस हो।
मेहनत कश इंसान को
फिर भी प्रभु पर ही विश्वास हो।
समझो प्रभु सब ठीक करेंगे।।

काम अगर ना बनते हों रिश्ते भी उलझते हों।
बात ना समझते हों खामखां झगड़ते हों।
मेहनत कश इंसान को
फिर भी प्रभु पर ही विश्वास हो।
समझो प्रभु सब ठीक करेंगे।।

प्यार कहीं ना मिलता हो मन नफरतों में पलता हो।
देख सभी को खलता हो खामखां मचलता हो।।
मेहनत कश इंसान को
फिर भी प्रभु पर ही विश्वास हो।
समझो प्रभु सब ठीक करेंगे।।

कोई साथ ना देता हो मन हमेशा रोता हो।
कोई बात ना सुनता हो बेवजह समझौता हो।।
मेहनत कश इंसान को
फिर भी प्रभु पर ही विश्वास हो।
समझो प्रभु सब ठीक करेंगे।।

उलझ मत मन से तू मनवा जाप कर जतन से तू मनवा।
कृपा करेंगे प्रभु जी तुम पर शुक्र मनाना तब तू मनवा।।
हुआ विश्वास है प्रभु पर।
बढ़ गई आस है प्रभु पर।
प्रभु को शत् शत् है नमन।
मन से किया मुझको अमन।।

९६.
सावन की पहली फुहार

बारिशों में भीग जाना अच्छा लगता है।
नयन-नयन मनुहार करना अच्छा लगता है।।

सावन की पहली फुहार में मन में उठे हिलोर।
उस पर तेरी याद सताना अच्छा लगता है।।

मेघा कारे कैसे छाये कड़-कड़ बिजली चमके।
खिड़की से उस पार झांकना अच्छा लगता है।।

टिप-टिप पड़तीं बारिश बूंदें यादें ताजा करतीं हैं
सोंधी माटी का महकना अच्छा लगता है।।

खग-मृग कलरव भी करते हैं दिखते कितनें प्यारे।
देख इन्हें दिल को बहलाना अच्छा लगता है।।

सतरंगी वो इंद्रधनुष भी कैसे झांक रहा मेघों से।
सतरंगी सा खुद को रंगना अच्छा लगता है।।

झूले पड़ गये डाली डाली मन कितना लुभाते हैं।
तेरे संग फिर पींग बढ़ाना अच्छा लगता है।।

सावन में तुम जब भी आते मन मेरा हर्षित होता।
बना भजिया तुमको खिलाना अच्छा लगता है।।

चंचल चितवन देखकर मन में उठे हिलोर।
रिमझिम सी बरसात में नृत्य करत मन मोर।
बौछारें अंगना पड़ें   करें   पिया   मनुहार।
पावस में भीगा बदन   बंधी पिया संग डोर।।

97.
खुद के लिए भी जीना सीखो

निपट अकेली बैठ कभी मैं।
अन्तर्मन झांका करती हूं।।
उठें हिलोरें दुख सुख की जो।
उनको बस देखा करती हूं।।

बीत गया है समय बहुत ही।
खुद से किये हुए मुलाकात।
आज निकाला समय है मैंने।
करनें को बातें इफरात।।

कभी गृहस्थ में व्यस्त रही मैं।
कभी दुनिया की बातों में।
शनै-शनै खुद को त्यागा है।
है नींद गवांई रातों में।।

फिर किया विचार एक दिन मैंने।
तुम खुद क्या हो ये भी तो जानों।
बहुत जी लिया सबके लिए अब।
खुद की गरिमा को पहचानों।।

पलट दिये जीवन के पन्ने।
किये उजागर जो थे मन में।
किया पुनर्जीवित फिर उनको।
हुनर जो थे अपनें ज़हन में।।

खुशी मिली है आज वो हमको।
पुनर्जीवन अब पाया है।।
अन्तर्मन है कितना सुन्दर।
कविता से इसे सजाया है।।

जीवन में सारे काम करो तुम।
खुद से मत अनजान रहो तुम।
हैं अष्ट भुजायें तेरे भीतर।
उस शक्ति को प्रणाम करो तुम।।

हुनर अपना दिखाने का हुनर भी सीख जाओ तुम।
तमन्नाएं दबीं जो हैं उन्हें खुल कर बताओ तुम।
कहीं तुम खो न देना फिर जहां की भीड़ में खुद को।
समय रहते जहां को भी कलाकारी दिखाओ तुम।।

९८.
फितरत नहीं बदलती

बना लो कोठियां कारें नहीं फितरत बदलती है।
दिखावा खूब कर लो तुम हक़ीक़त नहीं बदलती है।।

सभी की जी हुजूरी में रहे इंसान हरदम ही।
सज़ा का वक्त जब आता नहीं कुदरत बदलती है।।

रहे साक्षी खुद इंसां तो सदा ही खुद के कर्मों का।
सभी कुछ जानता है पर नहीं हरक़त बदलती है।।

लकीरें हाथ की लोगों मिटाईं जा नहीं सकतीं।
दिखा कर हाथ ज्योतिष को नहीं किस्मत बदलती है।।

जो बोया है उसी का फल तो पाना लाज़मी होता।
करो तुम दान कितना भी नहीं मोहलत बदलती है।।

अभी भी वक्त है सुन ले अरे नादान ओ बन्दे।
झुका पेशानी तू उसको नहीं रहमत बदलती है।।

कमाओ खुब तुम दौलत मगर ईमान हो शामिल।
खुदा ऐसा रिज़्क देता नहीं बरक़त बदलती है।।

समय बहरा हुआ लेकिन नज़र वो खूब रखता है।
करो तुम कर्म जैसा भी नज़र में उसकी रहता है।
समय का फ़र्ज़ ये बनता समय जब जिसका आता है।
सज़ा देता उसी को वो बुरा जो कर्म करता है।।

९९.
रवैया बच्चों का

करें परवाह हम जिनकी वहीं हमको रुलाते हैं।
दिखा कर रौब फिर अपना हमीं को आज़माते हैं।।

खिलाया जिन परिंदों को सुकूं अपना गंवा कर के ।
लगे जैसे ही पर उनके ठिकाना छोड़ जाते हैं।।

हमेंशा तन्ज़ करते हैं किया तुमने कभी क्या है।
उन्हीं को भूल जाते हैं रिज़्क जिनका वो खाते हैं।।

बड़े ही प्यार से तुमको बनाया वालदायन नें।
तुम्हारी तरबियत खातिर किये नित उसनें फांके हैं।।

पिता माता को ऐ बंदे कभी तुम भूल मत जाना।
दुआओं में खुदा के दर सदा अर्ज़ी लगाते हैं।।

बड़ी बातें जो तुम करते तुम्हारा ब्रांड है अपना।
यहां तक तुम जो पहुंचे हो फ़क़त उनके हि खाते हैं।।

तुम्हारे वालदायन नें सिंचाया खून से तुमको।
उन्हीं को खून के आंसू नयन भर कर रुलाते हो।।

आंगन में बूढ़ा तरुवर है इसे कभी मत काटना।
फल देने से मुक्त हुआ पर फिर भी तुम मत छांटना।
छाया उसकी तो शीतल है सभी बिछाते खाट हैं।
उनकी शीतल छाया में तुम गुरु का सत्संग बांटना।।

100.
बांटों ज़िन्दगी के अनुभव

प्रेम प्रीत से बीत रहा जो सुन्दर वो संसार लिखो।
कुछ खट्टी मीठी यादों का अनुपम सा उपहर लिखो।।

दुनिया सीखेगी तुमसे वो जो तुम अनुभव बता रहे।
आपस में मिल जुल कर रहते तुम कैसे हो यार लिखो।।

मात पिता की सेवा करते ईश्वर उनको मान रहे।
पाया जो आशीष है तुमने बरकतें और प्यार लिखो।।

मात पिता के संस्कारों से बच्चे सुन्दर पनप रहे।
इक दूजे का तुम करते हो कैसे ये सत्कार लिखो।।

तरह तरह से घर को सजाते खुशियों भरे परिवार को।
सब की दृष्टि तुम पर रहती अपना सोच विचार लिखो।।

दुनिया निन्दा भी तो करती तुम पर कोई फर्क ना पड़ता।
आगे बढ़ते अपनी धुन में कैसे सहते खार लिखो।।

अनुभव अपना तुम्हें बताऊं सुन लो तुम बड़े ध्यान से।
जब से ईश्वर को अपनाया सुख अनन्त फिर पाया है।
लिखने को तो क्या लिखूं मैं वो तो अपरिभाषित है।
महिमा उसकी हरदम गा कर खुद को उसमें समाया है।।

101.
पुरानी सुनहरी यादें

इश्क में दरिया दिली की वो रवानी याद है।
लब भले ख़ामोश हों पर वो कहानी याद है।।

इश्क करते थे तुम्हें हम जान अपनी जान कर।
नाम लेते थे हमारा "ओ दिवानी" याद है।।

दिल दिया था आपनें भी जान अपनी जान कर।
आज भी हमनें संजोई वो निशानी याद है।।

क्या समां था घूमते थे हाथ ले कर हाथ में।
भीगती बरसात की वो ऋतु सुहानी याद है।।

याद हैं वो दिन सुहाने जो बिताये थे कभी।
था लड़कपन भी हमारा वो जवानी याद है।।

रूठ जाते थे कभी तुम यूं हमारी बात पर।
अटपटी बातें "नवीना" वो पुरानी याद है।।

तुम्हारे पास आने का बहाना ढूडंता है दिल।
तुम्हारे दिल में रहने का ठिकाना ढूडंता है दिल।
बड़ी उलझन हमारी थी बताऊं क्या तुम्हें जानम।
तुम्हारे इश्क में पागल ज़माना ढूडंता है दिल।।

102.
ईमान दारी खुद से

हम भला उनकी बुराई क्यों करें।
सब्र रखते हैं लड़ाई क्यों करें।।

जल रहे जो खुद ही खुद की आग में।
फिर भला हम बेवफाई क्यों करें।।

बेवफाई रास हमको है नहीं।
फिर भला हम रहनुमाई क्यों करें।।

हैं तकब्बुर में जहां के लोग भी।
बेवजह हम आशनाई क्यों करें।।

बन्द रखते हैं जो अपनी आंख को।
हम भला फिर रोशनाई क्यों करें।।

लूटते हैं जो अना मज़लूम की।
फिर भला उनकी भलाई क्यों करें।।

बिन मतलब के साथ ये चलते नहीं।
हम भी उनकी जी हुजूरी क्यों करें।।

धर्म कहते हैं किसे मज़हब है क्या।
लड़-झगड़कर जग हंसाई क्यों करें।।

दूरियां वाजिब हैं इनसे ऐ बशर।
फिर "नवीना" वाह वाही क्यों करें।।

जीवन में आनन्द भरा है करना दुर्व्यवहार नहीं।
बिना बात किसी के ऊपर रखना तुम अधिकार नहीं।
अपनी मस्ती में खुश रहना मिलती खुशियां मुश्किल से।
मदद किसी से ना मिले तो होना   तुम लाचार नहीं।।

रहनुमाई - मार्ग दर्शन, आशनाई - मित्रता, तकब्बुर - घमंड, वाजिब – सही

103.
आरोपी खुद को टटोलें

माना कि हम बुरे हैं जनाब बखूबी हम जानते हैं।
आप भी कौन सा दूध के धुले हैं बखूबी हम जानते हैं।।

इसकी टोपी उसके सर उसकी टोपी इसके सर पहनाने वाले।
जगह-जगह क्या रायता फैलाते हैं बखूबी हम जानते हैं।।

हमारी ईमानदारी पर शक करना तुम्हें खूब आता है बरखुरदार।
हमारे सीने में भी दबे है तुम्हारे कुछ राज़ बखूबी हम जानते हैं।।

दिलों में रंजिश चेहरे पर बनावटी मुस्कुराहट लिए।
दाग़दार तुम्हारे किरदार को बखूबी हम जानते हैं।।

पोल खुलेगी तेरी भी इक ना इक दिन इस ज़माने में।
खिलाफ तुम्हारे भी ज़माना होगा बखूबी हम जानते हैं।।

मुंह छिपाते फिरोगे तुम भी कहां तलक भागोगे आखिर।
ठिकाने भी तुम्हारे जहां तहां हैं बखूबी हम जानते हैं।।

अभी भी वक्त है झुका ले सर अपना उस परवरदिगार के आगे।
सुना है बड़ा रहमदिल है वो माफ कर देगा बखूबी हम जानते हैं।।

कर्म जैसा जो करता है मुताबिक फल वो पाता है।
सताता जो किसी का दिल समय उसको रुलाता है।
समय की चाल से बन्दे कभी तुम बच नहीं सकते।
ज़ला कर लंका रावण की सबक सबको सिखाता है।।

104.
सच्चा इश्क

ज़िन्दगी में तो हमें कोई सहारा ना मिला।
डगमगाती मेरी कश्ती को किनारा ना मिला।।

हम सदा चलते रहे तेरे इशारों पे सनम।
डूबे दरिया में मगर तेरा इशारा ना मिला।।

हम तरसते ही रहे पाने को' तुमको ऐ सनम।
तिश्नगी दिल में रही कोई हज़ारा ना मिला।।

चांद तारे ही गवाही थे मुहोब्बत की मिरी।
आसमां पर तो मगर कोई सितारा ना मिला।।

रौशनी दे ना सका कोई भी हमको ऐ खुदा।
चार सू फैला धुंआ कोई शरारा ना मिला।।

था " नवीना" को यकीं तुम पे हमेशा से सनम।
पर सहारा तिरा हमको भी दुबारा ना मिला।।

मिले सम्बल तुम्हारा तो जहां को जीत लेंगे हम।
जलायेंगे दिये मिलकर हवा को जीत लेंगे हम।।
नियत अवदात ग़र अपनी खुदा भी साथ देता है।
मिलेगा प्रेम फिर सबका दुआ भी जीत लेंगे हम।।

105.
महिला दिवस

नारी के बिना तो सब कुछ अधूरा है।
प्रत्येक दिवस नारी के संग ही पूरा है।।
****

बृह्मा ने अवतार रचाया है नारी।
समस्त गुणों की खान बनाया है नारी।।

घर को इक परिवार बनाती है नारी।
घर वालों की शान बढ़ाती है नारी।।

करके सबको प्रेम संगठित है रखती।
इक दूजे का मान कराती है नारी।।

घर पर विपदा आन पड़े तो फिर देखो।
मेहनत कर के हाथ बंटाती है नारी।।

पढ़ी लिखी हैं आज नारियां भी देखो।
बड़े बड़े अब यान चलातीं हैं नारी।।

संकट में हो देश निभातीं फर्ज अपना।
बड़े बड़े हथियार उठातीं हैं नारी।।

देवी का है रूप करो सम्मान इनका।।
पूरे घर की लाज बचाती है नारी।।

करते यदि अपमान नहीं वो फिर बहती।
तुरत चंडिका रूप दिखाती है नारी।।

106.
साज़ ए दिल

साज़ दिल के मैं बजाना चाहती हूं।
अब नया कुछ कर दिखाना चाहती हूं।

लोग जलते हैं हुनर से अब हमारे।
बन्द उनका मुंह कराना चाहती हूं।।

देखती हूं कौन कुछ कहता है' मुझको।
मैं ज़माना आज़माना चाहती हूं।।

खटकता सबको यहां ईमान मेरा।
कर दिखा सिक्का जमाना चाहती हूं।।

है मुखालिफ इस जहां के लोग सारे।
भीड़ में खुद को दिखाना चाहती हूं।।

है भरा ईमान मेरी तरबियत में।
राह सच की इक बनाना चाहती हूं।।

या खुदा तेरी खुदाई हो मयस्सर।
मैं क़राहत अब मिटाना चाहती हूं।।

हो नवाज़िश अपकी हम पर खुदाया।
जग "नवीना" जीत जाना चाहती हूं।।

मुख़ालिफ़ - विरोधी, तरबियत - पालन-पोषण
मयस्सर - प्राप्त, कराहत- ज़ुल्म, नवाज़िश -कृपा।।

107
कलयुगी सिया

सिया ऐसी हो तो भगवन किसी को ये सिया मत दो।
किया बदनाम है इसनें सभी को तुम गिला मत दो।।

सिया माता तो पावन थी करी थी अग्नि परीक्षा भी।
सिया माता की पावनता सिया से तुम मिला मत दो।।

सिया बस नाम है इनका नहीं किरदार इनका है।
मिलातीं हाथ ये सबसे बहु इनको बना मत दो।।

बड़ा ही घोर कलयुग है प्राण के प्यासे हैं सारे।
मना कर दो जी शादी से पहाड़ी से गिरा मत दो।।

सिया हो या रिया हो या ज़िया हो सब बराबर हैं।
फ़क़त मशहूरी पाने को अना खुद की भुला मत दो।।

दिया है कुदरत नें तुमको ज़हन कुछ तो ज़रा समझो।
पिता माता की इज़्ज़त को यूं मिट्टी में मिटा मत दो।।

बनाओ भाग्य तुम अपना सदा अपने हि कर्मों से।
"नवीना" कह रही तुमको खुद अपने को सज़ा मत दो।।